www.deshkiupasana.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - UPHIN/2022/86937

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE

सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 04 | अंक – 281 | जौनपुर मंगलवार, 02 जून 2026 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

तेलुगु गंगा नहर के माध्यम से जल आपूर्ति फिर से शुरू

तेलुगु, (एजेंसी)। आंध्र प्रदेश के कंदलेरू जलाशय से कृष्णा नदी का पानी छोड़ने के बाद तेलुगु गंगा नहर प्रणाली के माध्यम से तमिलनाडु पहुंचना शुरू हो गया है। इससे गर्मी के मौसम के बीच शहर के पेयजल जलाशयों में पानी की आपूर्ति बढ़ रही है। जल संसाधन विभाग (डब्ल्यूआरडी) के अधिकारियों ने बताया कि कृष्णा नदी का पानी वर्तमान में पूंडी जलाशय में 75 घन फुट प्रति सेकंड (क्यूसेक) की दर से बह रहा है, जो कुछ दिन पहले दर्ज किए गए 50 क्यूसेक के प्रारंभिक प्रवाह से अधिक है। यह पानी तिरुवल्लूर जिले के उथुकोट्टई स्थित जीरो पॉइंट से होते हुए तमिलनाडु में प्रवेश कर पूंडी जलाशय तक पहुंचा, जो चेन्नई की पेयजल आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाले चार प्रमुख जलाशयों में से एक है। यह जल प्रवाह ऐसे महत्वपूर्ण समय में आया है, जब शहर के जलाशयों में कुल मिलाकर 7. 154 हजार मिलियन घन फुट (टीएमसी फीट) पानी है, जो उनकी कुल भंडारण क्षमता का लगभग 54.11 प्रतिशत है। कृष्णा नदी का जल छोड़ा जाना तमिलनाडु के अधिकारियों द्वारा आंध्र प्रदेश के अधिकारियों से हाल ही में किए गए अनुरोध के बाद हुआ है, जिसमें उन्होंने गर्मियों के महीनों में चेन्नई की पानी की मांग को पूरा करने के लिए अतिरिक्त आपूर्ति की मांग की थी। इस अनुरोध पर आंध्र प्रदेश सरकार ने कंदलेरू जलाशय से लगभग 1,900 क्यूसेक पानी तेलुगु गंगा नहर नेटवर्क में छोड़ा।

जेद्दा में भारत के महावाणिज्यदूत फहाद सूरी ने हज यात्रियों को मुबारकबाद दी

जेद्दा, (एजेंसी)। जेद्दा में भारत के महावाणिज्यदूत फहाद सूरी ने हज की रस्मों के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर सभी भारतीय हज यात्रियों को मुबारकबाद दी। उन्होंने प्रस्थान चरण के आरंभ होने के अवसर पर सभी हज यात्रियों की सुरक्षित और सुगम स्वदेश वापसी के लिए शुभकामनाएं भी दी। जेद्दा में भारत के महावाणिज्यदूत फहाद सूरी ने कहा, "ये बताते हुए खुशी हो रही है कि हज का बुनियादी मरहला सफलतापूर्वक पूरा हो चुका है। और कल मीना से हुजाज की वापसी भी अमन और सुकून के साथ हो गई है। इस तरह हज के सबसे अहम अरकान मुकम्मल हो गए हैं। इस मुबारक मौके पर सभी हुजाज को हज की सफल अदायगी पर बहुत बहुत मुबारकबाद। हम दुआ करते हैं कि आपकी इबादत और मेहनत कबूल हो और आप घर लौटे तो अपने साथ बहुत सी बरकत और रुहानी फायदे लेकर जाएं। वापसी का मरहला 1 जून से शुरू होगा। सभी इंतजाम इस तरह किए गए हैं ताकि वापसी का सफर आसान, सुकून और अच्छे तरीके से हो। हम सभी हुजाज के लिए अमन, सुविधा और आराम भरे सफर की दुआ करते हैं। जो हुजाज अभी यहां रूके हुए हैं उनके लिए भी अच्छी सेहत और आराम की दुआ है।

मेरिट में बेटियों का दबदबा, बेटों को उनसे सीखने की जरूरत : सीएम योगी

लखनऊ, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि प्रदेश की बोर्ड परीक्षाओं की मेरिट सूची इस बात का प्रमाण है कि छात्राएं मेहनत, अनुशासन और समर्पण के दम पर लगातार नए कीर्तिमान स्थापित कर रही हैं। उन्होंने कहा कि बेटियों की सफलता केवल परिवार ही नहीं, बल्कि समाज और राष्ट्र की प्रगति का भी आधार बनती है। लोकभवन में आयोजित मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह में मुख्यमंत्री ने यूपी बोर्ड, संस्कृत शिक्षा परिषद, सीबीएसई और आईसीएसई के राज्य स्तरीय कुल 223 मेधावियों को एक–एक लाख रुपए, टैबलेट, मेडल और प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस दौरान

11 विद्यालयों के प्रधानाचार्यों और शिक्षकों को भी सम्मानित किया गया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सीएम योगी ने मेरिट सूची में छात्राओं की बढ़ती संख्या का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि सम्मानित किए जा रहे 223 विद्यार्थियों में 138 छात्राएं और 85 छात्र हैं। हाईस्कूल की प्रदेश स्तरीय मेरिट सूची में 115 विद्यार्थियों में 81 छात्राएं और 34 छात्र शामिल हैं, जबकि इंटरमीडिएट की टॉप सूची में 14 छात्राएं और नौ छात्र हैं। यह आंकड़े बताते हैं कि छात्राएं अधिक परिश्रम कर रही हैं और बेहतर परिणाम हासिल करने की क्षमता रखती हैं। उन्होंने कहा कि पहले माना जाता था कि छात्राएं घर के कामकाज में माता–पिता का हाथ बंटाती हैं, लेकिन अब परिणाम देखकर लगता है कि लड़के शायद झाड़ू–पोछा और घरेलू कामों में ज्यादा व्यस्त हो गए हैं। हालांकि उन्होंने इसे प्रेरणा के रूप में लेते हुए कहा कि छात्रों को छात्राओं से सीख लेनी चाहिए कि परिवार की जिम्मेदारियों में सहयोग करते हुए भी उत्कृष्ट प्रदर्शन कैसे किया जा सकता है।

पुलिस को नागरिकों का सहयोगी और मार्गदर्शक बनना चाहिए : राष्ट्रपति मुर्मु

गंगटोक, (एजेंसी)। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने गुरुवार को गंगटोक में सिक्किम पुलिस को श्राष्ट्रपति का निशानश प्रदान किया। इस अवसर पर राष्ट्रपति ने इस सम्मान के लिए सिक्किम पुलिस से पूर्व में और वर्तमान में जुड़े सभी अधिकारियों और पुलिसकर्मियों को बधाई दी। उन्हें यह जानकर प्रसन्नता हुई कि वर्ष 1897 में अपनी स्थापना के बाद से, इस पुलिस बल ने सिक्किम में शांति, सुरक्षा, और न्याय सुनिश्चित करने के लिए कार्य किया है। राष्ट्रपति मुर्मु ने कहा कि भारत की पुलिस व्यवस्था में लंबे समय तक चले औपनिवेशिक शासन का प्रभाव रहा है। गुलामी के दौर में, पुलिस का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा करना नहीं, बल्कि उन पर नियंत्रण रखना और शासन के आदेशों को कठोरता से लागू करना था। इसी कारण, पुलिस व्यवस्था में गुलामी की मानसिकता विकसित हो गई। इस मानसिकता के अनुसार पुलिस में जनता का सहयोग करने की सोच के बदले उन पर शासन करने की सोच होती थी। अब इस सोच में बदलाव आ रहा

है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि देशवासियों को सशक्त बनाने के लिए गुलामी की इस सोच से पूरी तरह से मुक्ति अत्यंत आवश्यक है। तभी देशवासी विकसित भारत के लक्ष्य को हासिल करने में बढ़–चढ़कर योगदान दे पाएंगे। राष्ट्रपति ने इस बात पर जोर दिया कि पुलिस व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने कहा कि पुलिस व्यवस्था को और अधिक नागरिक–हितैषी बनाया जाना चाहिए ताकि सामान्य लोग बिना भय के अपनी समस्या दर्ज करा सकें। महिलाओं, बच्चों और समाज के कमजोर वर्गों के प्रति संवेदनशील व्यवहार को भी प्राथमिकता देनी चाहिए।

भारत–ओमान सीईपीए लागू, किसानों और छोटे कारोबारियों के लिए खुलेंगे नए अवसर : पीयूष गोयल

नई दिल्ली, (एजेंसी)। भारत–ओमान व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता (सीईपीए) या द्विपक्षीय व्यापार समझौता सोमवार से लागू हो गया। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि इस समझौते से किसानों, कारीगरों, मछुआरों, महिलाओं, छात्रों तथा लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) के लिए नए अवसर पैदा होंगे और भारतीय निर्यात को बढ़ावा मिलेगा। गोयल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर कहा कि यह समझौता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के उस विजन की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है, जिसका उद्देश्य नए बाजार खोलना, निर्यात बढ़ाना, निवेश आकर्षित करना और रोजगार सृजन को गति देना है। उन्होंने कहा कि इससे विभिन्न वर्गों के लिए वैश्विक स्तर पर समृद्धि के नए रास्ते तैयार होंगे। सीईपीए लागू होने के बाद ओमान में भारत के 99.38: निर्यात को कवर करने वाली 98: टैरिफ लाइनों पर तत्काल 100: शुल्क–मुक्त बाजार पहुंच मिल जाएगी। इससे पहले केवल 15.3: भारतीय निर्यात को ही शून्य शुल्क का लाभ प्राप्त था। गोयल के अनुसार, इससे ओमान में 5: आयात शुल्क वाले करीब 3.64 अरब डॉलर मूल्य के भारतीय उत्पाद अधिक प्रतिस्पर्धी बन जाएंगे और निर्यातकों को बड़ा लाभ मिलेगा। मंत्री ने कहा कि समझौते के बाद लौह एवं इस्पात, वस्त्र, चमड़ा, ऑटो कंपोनेंट्स और औद्योगिक उपकरण जैसे क्षेत्रों में बड़े अंतरराष्ट्रीय ऑर्डर मिलने की संभावना है।

पश्चिम बंगाल में मंत्रिमंडल का विस्तार, राज्यपाल ने 35 नए मंत्रियों को दिलाई शपथ

कोलकाता, (एजेंसी)। सोमवार को पश्चिम बंगाल मंत्रिमंडल में 35 नए मंत्रियों को शामिल किया गया। कोलकाता के लोक भवन में राज्यपाल आरएन रवि ने नए मंत्रियों को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी उपस्थित रहे। सोमवार को 13 विधायकों ने कैबिनेट मंत्री के रूप में शपथ ली, जबकि 19 राज्य मंत्री और 3 राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) बनाए गए हैं। कैबिनेट मंत्रियों में दीपक बर्मन, तपस रॉय, शंकर घोष, मनोज कुमार उरांव, अर्जुन सिंह, गौरी शंकर घोष, स्वपन दासगुप्ता, जगन्नाथ चट्टोपाध्याय, कल्याण चक्रवर्ती, अजय

पोद्दार, शरद्वत मुखर्जी, दूध कुमार मंडल और अनुप कुमार दास शामिल हैं। राज्य मंत्रियों में जोएल मुर्मू, हरेकृष्ण बेरा, आनंदमय बर्मन, अशोक डिंडा, नदियार चंद बाउरी, विशाल लामा, शांतनु प्रमाणिक, मौमिता बिस्वास मिश्रा, उमेश रे, पूर्णिमा चक्रवर्ती, कौशिक चौधरी, भास्कर भट्टाचार्य, दिबाकर घरामी, अमिया किस्कू, कलिता माझी, गार्गी दास घोष, बिराज विश्वास, दीपंकर जना और सुमना सरकार को जगह मिली है। इसके अलावा, इंद्रनील खान, मालती राभा रॉय और राजेश महतो ने राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) के रूप में शपथ ली। 35 नए मंत्रियों के शपथ लेने के बाद राज्य मंत्रिमंडल में कुल मंत्रियों की संख्या बढ़कर 41 हो गई है। 9 मई को पश्चिम बंगाल में पहली बार भाजपा सरकार बनने के साथ छह मंत्रियों ने शपथ ली थी। इनमें मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी के अलावा अग्निमित्रा पॉल, दिलीप घोष, निसिथ प्रमाणिक, अशोक कीर्तनिया और खुदीराम टुडू शामिल थे। पिछले सप्ताह मुख्यमंत्री सुवेंदु अधिकारी और पश्चिम बंगाल भाजपा अध्यक्ष ने पार्टी के केंद्रीय नेतृत्व से मुलाकात कर 35 नए मंत्रियों के नामों को अंतिम रूप दिया था। संभावना है कि नए मंत्रियों के विभागों (पोर्टफोलियो) की घोषणा भी आज ही की जाएगी।

भारत–म्यांमार संबंधों को मजबूती देने पर पीएम मोदी और राष्ट्रपति की चर्चा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोमवार को दिल्ली के हैदराबाद हाउस में म्यांमार के राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग से मुलाकात की। दोनों नेताओं ने भारत और म्यांमार के बीच रिश्तों को और मजबूत बनाने के तरीकों पर चर्चा की। बैठक में व्यापार, अर्थव्यवस्था, तकनीक और लोगों के आपसी संबंधों समेत कई क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर बात हुई। म्यांमार के राष्ट्रपति ह्लाइंग दिल्ली स्थित राष्ट्रपति भवन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु से भी मुलाकात करेंगे। वे दिल्ली के कुतुब गोल्फ कोर्स स्थित राय पिथौरा सांस्कृतिक परिसर में आयोजित श्द लाइट एंड द लोटसरू रिलिक्स ऑफ द अवेकेंड वनश प्रदर्शनी का भी दौरा करेंगे।

यह एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय प्रदर्शनी है, जिसमें भगवान बुद्ध के पवित्र पिपरहवा अवशेषों को प्रदर्शित किया गया है। इससे पहले रविवार को राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग ने दिल्ली में राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार (एनएसए) अजीत डोभाल से मुलाकात की और सुरक्षा सहयोग से जुड़े मुद्दों पर चर्चा की। शनिवार को विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने भी राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग से मुलाकात की। मुलाकात के बाद जयशंकर ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर लिखा, ष्नई दिल्ली में म्यांमार के राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग से मुलाकात करके खुशी हुई। भारत और म्यांमार के लंबे समय से चले आ रहे सहयोग को और गहरा करने के प्रति उनके सकारात्मक रुख की सराहना करता हूं।ष उन्होंने कहा, ष्प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी बैठक से शांति, प्रगति और समृद्धि के लिए हमारी साझेदारी को और आगे बढ़ाने की उम्मीद है।ष राष्ट्रपति यू मिन आंग ह्लाइंग शनिवार को नई दिल्ली पहुंचे थे, जहां हवाई अड्डे पर केंद्रीय राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह ने उनका स्वागत किया। स्वागत के बाद कीर्ति वर्धन सिंह ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर लिखा, ष्दिल्ली पहुंचने पर म्यांमार के राष्ट्रपति मिन आंग ह्लाइंग का स्वागत करना मेरे लिए सम्मान की बात है। उनकी यात्रा भारत और म्यांमार के बीच लंबे समय से चले आ रहे ।

नवाचार, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी आने वाले दशकों में भारत की विकास यात्रा को परिभाषित करेंगे – जितेंद्र सिंह

नई दिल्ली, (एजेंसी)।केंद्रीय विज्ञान मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि पिछले 12 वर्षों में हुए तकनीकी परिवर्तन ने 2047 के लिए आधारशिला रखी है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत अब 'तकनीकी अनुयायी' से 'तकनीकी अग्रणी' देश बनने की ओर अग्रसर हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि इस परिवर्तन ने वैश्विक वैज्ञानिक परिदृश्य में भारत की स्थिति को भी मौलिक रूप से बदल दिया है। रविवार को दूरदर्शन न्यूज के साथ एक पॉडकास्ट में डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि दशकों तक भारत ने मुख्य रूप से अन्य देशों द्वारा विकसित तकनीकों को अपनाया और अक्सर अग्रणी देशों के वर्षों बाद नए तकनीकी क्षेत्रों में प्रवेश किया। उन्होंने कहा कि आज भारत वैश्विक स्तर पर अत्याधुनिक तकनीकों के विकास में सक्रिय रूप से भाग ले रहा है और कई क्षेत्रों में नवाचार की भावी दिशा को निर्धारित करने में भी योगदान दे रहा है। डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा, "पिछले बारह वर्षों में भारत ने प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक अनुयायी से एक अग्रणी देश के रूप में अपनी स्थिति में परिवर्तन किया है। इस अवधि के दौरान निर्मित वैज्ञानिक क्षमताएं, नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र और तकनीकी अवसंरचना ने 2047 में विकसित भारत की नींव रखी है।" उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी को राष्ट्रीय नीति निर्माण के केंद्र में लाकर निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित किया, नवाचार आधारित उद्यमशीलता को बढ़ावा दिया और यह सुनिश्चित किया कि वैज्ञानिक प्रगति से नागरिकों को लाभ मिले। उन्होंने कहा कि इस दृष्टिकोण ने भारत को एक ऐसा तकनीकी इकोसिस्टम तैयार करने में सक्षम बनाया है, जो आर्थिक विकास, रणनीतिक क्षमता और सार्वजनिक सेवा वितरणकृतीनों को एक साथ सहयोग देता है। भारत की अग्रणी प्रौद्योगिकी में बढ़ती प्रतिष्ठा का जिक्र करते हुए डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि देश ने अंतरिक्ष, परमाणु ऊर्जा, क्वांटम प्रौद्योगिकी, जैव प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और स्वच्छ ऊर्जा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति दर्ज की है।

सुप्रीम कोर्ट को मिले 5 नए जज, सीनियर एडवोकेट वी मोहना बनीं न्यायाधीश

नई दिल्ली, (एजेंसी)। देश की सर्वोच्च न्यायिक संस्था सुप्रीम कोर्ट को पांच नए न्यायाधीश मिल गए हैं। केंद्र सरकार ने सोमवार को चार हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीशों और वरिष्ठ अधिवक्ता वी मोहना को सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त करने की मंजूरी दे दी। केंद्रीय कानून एवं न्याय मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने इसकी जानकारी साझा की। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट में न्यायाधीशों की स्वीकृत संख्या 34 से बढ़ाकर 38 की गई थी। नई नियुक्तियों के बाद अदालत में जजों की संख्या 37 पहुंच गई है।मुख्य न्यायाधीश जस्टिस सूर्यकांत की अध्यक्षता वाले सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने इन नामों की सिफारिश केंद्र सरकार को भेजी थी। सरकार की मंजूरी के बाद पंजाब एवं हरियाणा हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस शील नागू, बॉम्बे हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस श्री चंद्रशेखर, मध्य प्रदेश हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस संजीव सचदेवा, जम्मू–कश्मीर एवं लद्दाख हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश जस्टिस अरुण पल्ली और वरिष्ठ अधिवक्ता वी मोहना सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश बनेंगे।वरिष्ठ अधिवक्ता वी मोहना की नियुक्ति कई मायनों में ऐतिहासिक मानी जा रही है। जस्टिस इंदु मल्होत्रा के बाद वह देश की दूसरी महिला हैं जिन्हें सीधे बार से सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त किया गया है। इसके साथ ही वह सुप्रीम कोर्ट के इतिहास की 12वीं महिला जज बन जाएंगी। वर्तमान में शीर्ष अदालत में केवल जस्टिस बी.वी. नागरत्ना महिला न्यायाधीश हैं और वी मोहना उनके साथ दूसरी मौजूदा महिला जज होंगी। सीधे बार से नियुक्त होने के कारण वी मोहना का कार्यकाल अपेक्षाकृत लंबा रहेगा और वह जून 2031 तक सुप्रीम कोर्ट में सेवाएं देंगी। कानूनी क्षेत्र में लंबा और प्रभावशाली अनुभवनई नियुक्तियों में शामिल जस्टिस शील नागू व्यक्तिगत स्वतंत्रता और पर्यावरण संबंधी मामलों के फैसलों के लिए जाने जाते हैं।

राकेश कुमार पाण्डेय ने ग्रहण किया डिप्टी डायरेक्टर (माध्यमिक शिक्षा) के रुप मे कार्यभार

अयोध्या। एक महीने से खाली चल रही डिप्टी डायरेक्टर अयोध्या मंडल(माध्यमिक) की कुर्सी आखिरकार एक बार फिर आबाद हो गई।बताते चलें कि डीआईओएस लखनऊ रहे राकेश कुमार पांडे पदोन्नति पाक डिप्टी डायरेक्टर (माध्यमिक शिक्षा) अयोध्या मंडल के रूप में अपना कार्यभार मंगलवार को ग्रहण किया।इससे पहले उन्होंने हनुमानगढी तथा राम मंदिर जाकर दर्शन पूजन करने के पश्चात शिक्षा भवन आकर डिप्टी डायरेक्टर अयोध्या मंडल के रूप में पदभार संभाला।उन्होंने बताया कि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना तथा शिक्षकों और छात्रों के साथ–साथ

अभिभावकों के बीच आपसी तालमेल बनाए रखाना उनकी प्रथम प्राथमिकता है।बताया कि माध्यमिक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, विद्यालयों कार्यालय में अनुशासन, शैक्षणिक वातावरण को बेहतर बनाने तथा छात्र–छात्राओं को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने को प्राथमिकता बताया।उन्होंने कहा कि शिक्षा व्यवस्था को और अधिक पारदर्शी, जवाबदेह एवं परिणामोन्मुख बनाया जाएगा, जिससे विद्यार्थियों को बेहतर भविष्य मिल सके।बताया कि शिक्षा केवल परीक्षा तक सीमित न रहे, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास का माध्यम बनेष्कृ इसी उद्देश्य के साथ माध्यमिक शिक्षा विभाग में नए सुधारों की उम्मीद जगी है। शिक्षा में सुधार के लिएषविद्यालयों में नियमित निरीक्षण, शिक्षकों की जवाबदेही तथा विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धियों को बढ़ाने के लिए विशेष कार्ययोजना बनाई जाएगी। उनके आगमन पर डीआईओएस डॉक्टर पवन कुमार तिवारी, वित्त एवं लेखा अधिकारी अनुपम कुमार, प्रदीप कुमार के अलावा अन्य कॉलेजों के प्रधानाचार्य तथा डीडीआर, जेडी, डीआईओएस कार्यालय के अधिकारियों तथा कर्मचारियों ने बुके देकर उनका स्वागत किया।

संपादकीय

अपेक्षा के अनुरूप ही

सुप्रीम कोर्ट का फैसला उचित होने के बावजूद उससे बुल्डोजरी अंदाज में कराए गए एसआईआर पर उठे सवालों का जवाब नहीं मिला है। ना ही इससे निर्वाचन आयोग की मंशा पर जताए गए शक दूर होंगे। मतदाता सूचियों का विशेष गहन पुनरीक्षण संवैधानिक रूप से उचित है, इसको लेकर कभी किसी को शक नहीं था। निर्वाचन आयोग को यह प्रक्रिया संपन्न कराने का अधिकार है, इस पर भी कोई भ्रम कभी नहीं रहा। अब सुप्रीम कोर्ट ने यही व्यवस्था दी है, तो वह अपेक्षा के अनुरूप ही है। विवाद इसे कराने के लिए चुने गए वक्त पर था। बिहार में विधानसभा चुनाव से ठीक पहले एसआईआर कराने का एलान निर्वाचन आयोग ने किया, तो उचित सवाल उठा कि आखिर इसकी जल्दबाजी क्यों है? क्यों नहीं यह काम तसल्ली से और सभी संबंधित पक्षों को भरोसे में लेते हुए कराया जा सकता है? जल्दबाजी के कारण मची अफरातफरी से बड़ी संख्या में मतदाताओं के मताधिकार से वंचित होने की आशंका पैदा हुई। कम–से–कम पश्चिम बंगाल में ऐसा असल में हुआ, यह कहने का ठोस आधार है। इन पहलुओं को ध्यान में रखें, तो कहा जा सकता है कि सुप्रीम कोर्ट का फैसला उचित होने के बावजूद उससे बुल्डोजरी अंदाज में कराए गए एसआईआर पर उठे सवालों का जवाब नहीं मिला है। ना ही इससे निर्वाचन आयोग की मंशा पर जताए गए शक दूर होंगे। दरअसल, सुप्रीम कोर्ट ने जब राज्यों में चुनाव से ठीक पहले स्ट्रीमरोलर के अंदाज में कराए जा रहे एसआईआर पर रोक लगाने से इनकार कर दिया, तो उसके साथ ही घटनोपरांत सुधार की गुंजाइश खत्म हो गई थी। बहरहाल, अब आए निर्णय में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा है कि निर्वाचन आयोग को एसआईआर के दौरान नागरिकता की जांच करने का अधिकार है। मगर तीन जजों की बेंच ने यह भी कहा कि मतदाता सूची में नाम शामिल ना करने का मतलब व्यक्तियों को उनकी नागरिकता से वंचित करना नहीं है। जिनके नाम हटाए गए, वे बाद में अपने दावे के साथ निर्णय प्रक्रिया में जा सकते हैं। मगर यह व्यवस्था समस्याग्रस्त है। सवाल है कि क्या वोट काट कर किसी वैध नागरिक को मतदान से वंचित रखने जवाबदेही तय की जाएगी और क्या इसकी कोई सजा होगी? ऐसा नहीं होने का मतलब क्या नागरिक के साथ अन्याय और लोकतंत्र के साथ खिलवाड़ करना नहीं होगा?

बालेन्द्र शाह ने सीमा विवाद सुलझाने के लिए ब्रिटेन को निमंत्रित कर अपनी जगहँसाई करवा ली है

नीरज

भारत और नेपाल के बीच लिपुलेख, लिम्पियाधुरा और कालापानी को लेकर चल रहा पुराना सीमा विवाद एक बार फिर सुर्खियों में है, लेकिन इस बार वजह कोई नया भू–राजनीतिक घटनाक्रम नहीं बल्कि नेपाल के प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह की चौंकाने वाली और कई मायनों में अपरिपक्व बयानबाजी बनी है। संसद में उन्होंने ऐसा दावा कर दिया जिसने काठमांडू से लेकर नई दिल्ली तक हलचल मचा दी। हालात इतने असहज हो गए कि कुछ ही घंटों बाद नेपाल के विदेश मंत्रालय को सफाई देने मैदान में उतरना पड़ा। और विडंबना देखिए, भारत को घेरने की कोशिश में दिया गया बयान नेपाल में ही प्रधानमंत्री के लिए भारी पड़ गया। विपक्ष, पूर्व विदेश मंत्री, पूर्व राजदूत और सीमा विशेषज्ञ तक उनके खिलाफ खड़े हो गए और उनसे सबूत, स्पष्टीकरण, यहां तक कि माफी की मांग होने लगी। सीमा विवाद पर राजनीतिक परिपक्वता दिखाने के बजाय बालेन्द्र शाह की टिप्पणियां ऐसी साबित हुईं जिन्होंने नेपाल की आधिकारिक स्थिति को ही कठघरे में खड़ा कर दिया। हम आपको बता दें कि नेपाली संसद में बोलते हुए बालेन्द्र शाह ने कहा कि उन्हें प्रधानमंत्री बनने के बाद पता चला कि केवल भारत ने ही नेपाल की जमीन पर अतिक्रमण नहीं किया है, बल्कि नेपाल ने भी कई स्थानों पर भारतीय भूमि पर अतिक्रमण किया है। उन्होंने दोनों देशों से तथ्यों का अध्ययन कर मित्रवत तरीके से विवाद सुलझाने की अपील की। उधर, नेपाल में विपक्षी दलों और पूर्व राजनयिकों ने बालेन्द्र शाह की टिप्पणियों पर तीखी प्रतिक्रिया दी। नेपाली कांग्रेस की बसना थापा और अन्य नेताओं ने संसद के अभिलेखों से बयान हटाने की मांग की। पूर्व विदेश मंत्री प्रदीप ज्ञवाली ने भी प्रधानमंत्री से माफी मांगने की बात कही। नेपाल के पूर्व राजदूत नीलाम्बर आचार्य और दीप कुमार उपाध्याय ने स्पष्ट कहा कि नेपाल द्वारा भारतीय भूमि पर अतिक्रमण का कोई आधिकारिक रिकॉर्ड मौजूद नहीं है। सीमा विशेषज्ञ बुद्धि नारायण श्रेष्ठ ने भी प्रधानमंत्री की बातों को तथ्यात्मक आधार से रहित बताया। इस प्रकार बालेन्द्र शाह का बयान भारत से अधिक नेपाल के भीतर ही विवाद का विषय बन गया। दरअसल, सीमा विवाद का केंद्र लिपुलेख, कालापानी और लिम्पियाधुरा क्षेत्र हैं। नेपाल का दावा है कि सुगौली संधि के अनुसार काली नदी का उद्‌गम लिम्पियाधुरा से होता है, इसलिए उसके पूर्व का पूरा क्षेत्र नेपाली भूभाग है। दूसरी ओर भारत का कहना है कि काली नदी का वास्तविक उद्‌गम लिपुलेख दर्रे के नीचे स्थित स्रोतों से होता है और ऐतिहासिक अभिलेखों के अनुसार कालापानी क्षेत्र लंबे समय से उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले का हिस्सा रहा है। यही मूल विवाद दोनों देशों के दावों की जड़ में है। हम आपको बता दें कि विवाद को हाल में उस समय नया मोड़ मिला जब नेपाल ने लिपुलेख मार्ग से होने वाली कैलाश मानसरोवर यात्रा पर आपत्ति जताते हुए भारत और चीन दोनों को कूटनीतिक नोट भेजा। भारत ने इस आपत्ति को खारिज करते हुए स्पष्ट किया कि लिपुलेख मार्ग से कैलाश मानसरोवर यात्रा 1954 से लगातार संचालित हो रही है और यह कोई नया घटनाक्रम नहीं है। भारत ने यह भी दोहराया कि एकतरफा तरीके से क्षेत्रीय दावों का विस्तार न तो ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित है और न ही स्वीकार्य है। उधर, बालेन्द्र शाह के बयान पर विवाद खड़ा होने के बाद नेपाल के विदेश मंत्रालय ने सफाई देते हुए कहा है कि प्रधानमंत्री का आशय यह नहीं था कि नेपाल ने आधिकारिक रूप से भारतीय भूमि पर कब्जा किया है। मंत्रालय के अनुसार सीमा के कुछ हिस्सों में सीमा स्तंभों की कमी, दशगजा क्षेत्र और सीमापार भूमि उपयोग जैसी व्यावहारिक समस्याओं के कारण ऐसी स्थितियां उत्पन्न हुई हैं जहां दोनों ओर के लोग एक–दूसरे की जमीन का उपयोग करते रहे हैं। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने यह भी दोहराया कि दोनों देश कूटनीतिक बातचीत, तकनीकी सर्वेक्षण और ऐतिहासिक दस्तावेजों के आधार पर समाधान खोजने के लिए प्रतिबद्ध हैं। लेकिन सबसे अधिक हैरानी प्रधानमंत्री बालेन्द्र शाह के उस सुझाव पर हुई जिसमें उन्होंने सीमा विवाद के समाधान में ब्रिटेन की भागीदारी की बात उठाई। उन्होंने तर्क दिया कि वर्तमान सीमाओं की पृष्ठभूमि औपनिवेशिक काल से जुड़ी है, इसलिए ब्रिटेन को भी इस विषय में रुचि लेनी चाहिए। यह प्रस्ताव न केवल

व्यावहारिक दृष्टि से कमजोर माना गया बल्कि नेपाल के भीतर भी इसे अपरिपक्व और अनावश्यक बताया गया। भारत और नेपाल के बीच सीमा विवाद हमेशा द्विपक्षीय ढांचे में चर्चा का विषय रहा है। ऐसे में तीसरे पक्ष को बीच में लाने की बात कूटनीतिक परंपराओं और स्थापित समझ से मेल नहीं खाती। इसके अलावा, सीमा विवाद जैसे संवेदनशील और पूर्णतः द्विपक्षीय विषय में ब्रिटेन को शामिल करने का सुझाव बालेन्द्र शाह की कूटनीतिक नासमझी का ऐसा सार्वजनिक प्रदर्शन था जिसने कई जानकारों को हैरान कर दिया। भारत दशकों से स्पष्ट करता आया है कि वह अपने किसी भी द्विपक्षीय विवाद में तीसरे पक्ष की मध्यस्थता या दखल को स्वीकार नहीं करता, चाहे मामला पाकिस्तान का हो, चीन का हो या नेपाल का। ऐसे में ब्रिटेन को बातचीत की मेज पर बुलाने का प्रस्ताव शुरू से ही अव्यावहारिक और वास्तविकताओं से कटा हुआ नजर आया। जिस देश ने दो शताब्दियों पहले उपमहाद्वीप छोड़ दिया, उसे आज की सीमा वार्ताओं में घसीटने की कोशिश को कई पर्यवेक्षकों ने राजनीतिक अपरिपक्वता बताया। दिलचस्प यह है कि बालेन्द्र शाह की इस टिप्पणी पर केवल नेपाल में ही नहीं, बल्कि ब्रिटेन के रणनीतिक और दक्षिण एशियाई मामलों पर नजर रखने वाले हलकों में भी हैरानी जताई गई और इसे अव्यावहारिक सोच का उदाहरण माना गया। कूटनीति की दुनिया में जहां गंभीरता, तैयारी और यथार्थवादी दृष्टिकोण की अपेक्षा की जाती है, वहां बालेन्द्र शाह का यह सुझाव कई लोगों को ऐसा लगा मानो किसी जटिल अंतरराष्ट्रीय विवाद के समाधान के लिए इतिहास की धूल झाड़कर ऐसे पात्रों को मंच पर बुलाने की कोशिश की जा रही हो जिनकी अब उस प्रक्रिया में कोई वास्तविक भूमिका ही नहीं बची है। देखा जाये तो सामरिक दृष्टि से लिपुलेख क्षेत्र का महत्व अत्यंत गहरा है। यह भारत, नेपाल और चीन के त्रिसीमा क्षेत्र के निकट स्थित है। यह केवल धार्मिक यात्रा का मार्ग नहीं बल्कि हिमालयी क्षेत्र में संपर्क, निगरानी और रणनीतिक पहुंच का महत्वपूर्ण केंद्र भी है। चीन की बढ़ती सक्रियता और हिमालयी क्षेत्र में बदलते भू–राजनीतिक समीकरणों के बीच यह इलाका राष्ट्रीय सुरक्षा की दृष्टि से और भी संवेदनशील हो गया है। इसलिए इस क्षेत्र से जुड़ा कोई भी राजनीतिक बयान केवल घरेलू राजनीति तक सीमित नहीं रहता बल्कि उसके व्यापक सामरिक प्रभाव भी होते हैं। नेपाल के प्रधानमंत्री का बयान इसी कारण अधिक विवादास्पद बन गया। बिना पर्याप्त तैयारी और तथ्यों की मजबूत प्रस्तुति के ऐसे संवेदनशील विषयों पर टिप्पणी करना न केवल कूटनीतिक भ्रम पैदा करता है बल्कि अपने ही देश की आधिकारिक स्थिति को कमजोर भी कर सकता है।

कमजोर मानसून तो महंगाई का लगेगा तड़का, अर्थव्यवस्था होगी प्रभावित

राजेन्द्र

मौसम विभाग द्वारा 29 मई को जून से सितंबर मानसून के दौरान 10 प्रतिशत कम बरसात का पूर्वानुमान बेहद चिंताजनक का कारण बन गया है। इससे पहले जारी पूर्वानुमान में 8 प्रतिशत कम बरसात की संभावना व्यक्त की गई थी। लगभग दस साल बाद देश में कमजोर मानसून के हालात रहने की संभावना है। अर्थव्यवस्था के लिए यह इसलिए और भी अधिक चिंतनीय हो जाता है कि एक और अमेरिका–इजरायल और ईरान के बीच सीजफायर के आसार नहीं दिख रहे हैं और इसके कारण भारत सहित दुनिया के अधिकांश देश कच्चे तेल और गैस की समस्या से दो चार हो रहे हैं और इसका सीधा असर महंगाई बढ़ना हो रहा है। दूसरी और अब अलनीनों के प्रभाव से इस साल कमजोर मानसून के कारण 10 प्रतिशत कम बरसात होने से हालात और भी गंभीर होने की संभावना बनती जा रही है। करीब दस साल बाद ऐसे हालात बनने जा रहे हैं। खास बात यह है कि उत्तर पूर्व को छोड़कर समूचे देश में कम बरसात की संभावना व्यक्त की गई है। मौसम विभाग के पूर्वानुमान को इसलिए भी नहीं नकारा जा सकता है कि पिछले सालों में भारतीय मौसम विभाग के पूर्वानुमान लगभग सटीक रहने लगे हैं। मजे की बात यह है कि इस साल गर्मी भी भीषण पड़ रही है और पिछले एक माह में ही जलाशयों में उपलब्ध पानी में तेजी से कमी आई है। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश के प्रमुख 166 जलाशयों में कुल भराव क्षमता का 24 प्रतिशत के आसपास ही पानी रह गया है और तेजी से पानी कम होता जा रहा है। दक्षिण भारत के हालात अधिक गंभीर है और वहां लगभग 17 प्रतिशत ही पानी रह गया है। उत्तरी भारत के जलाशयों में 26 तो पश्चिमी भारत के जलाशयों में 28 प्रतिशत के आसपास ही पानी रह गया है। मानसून भी तय समय से बिलंबित हो रहा है। एक बात साफ हो जानी चाहिए कि हमारी अर्थव्यवस्था मानसूनी बरसात पर बहुत कुछ निर्भर करती है। देश में मानसून सीजन में 87 सेमी बरसात होती है। पूर्वानुमानों को माने तो 2018 में 91 प्रतिशत बरसात हुई थी उसके बाद के सालों में मानसून लगभग अच्छा ही रहा है। पिछले सालों में मानसून की स्थिति देखें तो 2023 में मानसून अवश्य कमजोर रहा है अन्यथा देश में मानसूनी वर्षा 100 प्रतिशत के आसापास व इससे अधिक ही रही है। कमजोर मानसून के कारण भूजल स्तर में गिरावट, अधिक पानी पर निर्भर धान, तिलहन और दलहन की फसल प्रभावित होगी और इस कारण से खाद्य महंगाई बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता। इससे आम आदमी की थाली पर असर पड़ेगा और सब्जी, दाल और अनाज सभी के भाव बढ़ने का असर दिखाई देगा। इसी तरह से देश के अनेक हिस्सों में पीने के पानी की दिक्कत आम है। बांधों में तेजी से पानी की कमी और मानसून कमजोर रहने से पानी की कम आवक रहती है तो निश्चित रुप से सिंचाई व पेयजल दोनों के लिए पानी की दिक्कत होगी। जल विद्युत परियोजनाओं में विद्युत उत्पादन पर असर होगा तो कुल मिलाकर अर्थ व्यवस्था को प्रभावित होने से कोई नहीं रोक सकता। दरअसल देश में एक समय था जब सूखा आम होता था और व्यापक स्तर पर अकाल राहत कार्य संचालित होते थे। हांलाकि देश के हालातों में काफी सुधार हुआ है और अकाल को तो लगभग भूल ही चुके हैं। पर सवाल वहीं का वहीं है कि जल संचयन के जो प्रयास होने चाहिए थे और उनका जिस तरह का प्रभाव पड़ना चाहिए था वह अभी तक सामने नहीं आया है। सरकार के सामने कमजोर मानसून के हालात से निपटने की बड़ी चुनौती आने वाली है। सबसे अधिक तो जल संग्रहण की चुनौती होगी क्योंकि प्राकृतिक जल संग्रहण के रास्ते शहरीकरण की भेंट चढ़ चुके हैं। दीर्घकालीन सोच के साथ ठोस प्रयास नहीं होने से बरसात के पानी का सही तरीके से संग्रहण भी नहीं हो पा रहा है। जितने पानी की साल भर आवश्यकता होती है उससे अधिक बरसाती पानी तो बह जाता है। इसके अलावा पानी का उपयोग और दुरुपयोग दोनों ही बढ़ गए हैं। कम पानी से तैयार होने वाली फसलों की किस्में विकसित करने में हम अभी पूरी तरह से सफल नहीं हो पायें हैं। पांच नदियों के प्रदेश पंजाब तक में पानी का संकट होने लगा है। खेती ही नहीं घरेलू जरुरतों में भी पानी का उपयोग बहुत अधिक बढ़ गया है। टायलेट और कूलरों में पानी की खपत बहुत अधिक बढ़ गई है। जल बचाओ मात्र स्लोगन ही रह गया है और इसका असर दिखाई नहीं देता। इसी तरह से वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम तैयार तो बहुत किये गये हैं पर उनके निर्माण में जिस तरह की लापरवाही बरती गई है वह किसी से छिपी नहीं हैं। क्योंकि वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम कितना सफल रहा है वह सामने हैं। बाहरमासी नदी नालें तो अब कल्पना की बात हो गए हैं बल्कि बरसाती नदियां भी बरसात में एकाध बार ही पूरे वेग से बहती दिखती है। ऐसे में गंभीरता को तो समझा ही जा सकता है। एक बात साफ हो जानी चाहिए कि मानसून हमेशा सामान्य ही रहेगा यह सोचना अपने आप में गलत होगा। जिस तरह से वातावरण प्रदूषित हो रहा है, जंगल घटते जा रहे हैं, पेड़ पौधे कम हो रहे हैं वह किसी और की देन नहीं हमारे कारण ही हो रहा है। हालात यह हो गए हैं कि सर्दी में सर्दी नहीं और गर्मी में गर्मी को तरसने लगे हैं। यहां तक कि इस बार तो बसंत की प्रतीक्षा ही करते रह गए हैं। जनवरी फरवरी में सर्दी तो फिर मार्च अप्रेल में गर्मी का असर देखा गया। बसंत कब आया और कब गया पता ही नहीं चला। कहने का अर्थ है कि प्रकृति के साथ छेड़छाड़ का परिणाम सामने हैं। प्राकृतिक विपदाएं अधिक होने लगी है। ग्लेसियरों में तेजी से बर्फ पिघल रही है, समयपर बर्फवारी कम होने लगी है। बेमौसम आंधी ओलावृष्टि आम होती जा रही है। खैर यह विषयांतर होगा पर कहीं ना कहीं मानसून को लेकर दीर्घकालीन रणनीति बनानी ही होगी ताकि कमजोर मानसून का जनजीवन और अर्थ व्यवस्था पर व्यापक असर नहीं पड़े। सरकारी और गैरसरकारी स्तर पर इस दिशा में ठोस प्रयास करने होंगे।

मैं दिल्ली, हर चीज से पहले यहाँ थी

श्रुति व्यास

मुझे हमेशा मेरे लोगों ने बनाया। वे लोग जो बाहर से आए, जिन्होंने मुझे अपनाया और ऐसा करके मुझे बनाया। मैं हमेशा दिल वालों की दिल्ली रही हूँ। जन्म से नहीं, चुनाव से। ठहरने से। किसी कठिन चीज से प्रेम करने और उसे घर कहने से।ज्पर अब मुझे इतनी गहराई तक खोद दिया गया है कि मैं अपने भीतर का रिसाव सुन सकती हूँ। वे पेड़ गिरते सुनती हूँ जो दशकों से मेरे साथ खड़े थे।मेरी नसों पर मेट्रो के फैल जाने से पहले। उन फ्लाईओवरों के एक दूसरे पर चढ़ते जाने से पहले, जब आसमान तक इंजीनियर किया हुआ लगने लगा था। उन मॉलों के आने से पहले, जिनमें इत्र और ठंडी हवा की गंध भरी रहती है, और जहाँ कभी पुराने सिनेमा हुआ करते थे। फीके पड़ते पोस्टर, चिपचिपी फर्श और देर रात तक चलती फिल्में। उन कैफे के आने से पहले, जिनके अंग्रेजी नाम हैं और जिन्होंने उन रेस्तराँ की जगह ले ली जहाँ वेटर पिता तक को पहचानते थे। उस समय से पहले, जब यह शहर खुद से ही अधीर होने लगा था। उस सबसे पहले, मैं यहाँ थी। ब्रिटिशों के मेरे सीने पर अपनी सीधी, औपचारिक सड़कें खींचकर उसे नई दिल्ली कहने से पहले, मानो शहर की कल्पना सबसे पहले उन्हीं ने की हो। मुगलों के मुझे एक साथ भव्य और उदास बना देने से पहले। तुगलकों के मुझे बार बार बसाने और छोड़ने से पहले, उस बेचौनी के साथ जिसमें उन्हें खुद भी यकीन नहीं था कि मैं रहने लायक हूँ या नहीं। मैंने उन सबको आते देखा है। जाते भी। साम्राज्य हमेशा खुद को स्थायी मानकर आते हैं। शहर उनसे ज्यादा जानते हैं। 1947 में मैं एक तूफान से गुजरी थी। विभाजन मेरे भीतर घाव की तरह उतरा था। लाखों शरणार्थी आए। शहर की पहचान लगभग एक रात में बदल गई। फिर भी अजीब बात है, वे मेरे सबसे मुलायम साल थे। देश नया भी था, थका हुआ भी, और उम्मीद से भरा भी। मैं भी वैसी ही थी। चाँदनी चौक में तब भी ताँगे चलते थे। लोग राजपथ पर साइकिल चलाते थे। जनपथ का कॉफी हाउस तब तक खुला रहता था, जब तक कवियों और पत्रकारों के पास सिगरेट और बहस, दोनों खत्म नहीं हो जाते थे। हवा तब बस हवा थी। पानी बिना घबराहट के आता था। हर मौसम थकाता था, लेकिन सजा जैसा नहीं लगता था। शामें धीमी उतरती थीं। पेड़ों की छाया लंबी होती थी और सरकारी दफ्तरों से लौटते लोग बिना जल्दी के बस स्टॉपों पर खड़े दिखाई देते थे। पुरानी दिल्ली की गलियों में रात देर तक बर्तनों की आवाजें आती रहती थीं। नई दिल्ली अब भी अपने चौड़े रास्तों में आधी खाली लगती थी। शहर तब इतना तेज नहीं भागता था। उसे अभी खुद को साबित करने की उतनी बेचौनी नहीं हुई थी। मुझे वह भी याद है। सर्दियों की धूप में गोल मार्केट के लॉन पर दौड़ते छोटे कदम। बाबा खड़क सिंह मार्ग पर स्कूल बस पकड़ने के लिए भागती हुई वह लड़की। अपने पिता का इंतजार करती हुई, जो उसे तालकटोरा में तैरने ले जाते थे। हरियाली से भरा मेरा पुराना मुगल कटोरा, रिज की धरती में आसमान की ओर खुला हुआ। उसका स्कूल अदालत, स्टेडियम और प्रगति मैदान के पास था। वहीं हर साल पुस्तक मेला लगता था और राज रेवाल की कंक्रीट जाली पूरे परिसर के ऊपर उठती दिखाई देती थी। ज्यामिति, महत्वाकांक्षा और खुद पर भरोसा करती एक पूरी पीढ़ी का आकार। उसे तब यह नहीं पता था कि वह क्या महसूस कर रही है। वह बस ऊपर देखा करती थी। वह बड़ी हुई और मैं उसके साथ बदलती गई। हर रविवार शाम अपने भाई के साथ रेल भवन के बाहर खड़े पुराने भाप इंजन को चलाने का नाटक करती हुई। 1925 का वह दार्जिलिंग इंजन, छोटा, गरिमामय, जिसे दशकों तक वहीं रखा गया, जब तक किसी ने यह तय नहीं कर लिया कि उसकी जगह वंदे भारत की प्रतिकृति ज्यादा उपयुक्त लगेगी। संसद सत्रों के दौरान गाड़ी का संसद मार्ग की ओर मुड़ना, और पीछे बैठी वह लड़की उस गोल, ठहरी हुई इमारत को देखती रहती, जो सड़क के इतना करीब लगती थी मानो हाथ बढ़ाकर छू सकती हो। तब भी लोगों पर विश्वास करती हुई, जिनके लिए वह बनाई गई थी। सर्दियों की धुंध। फुटपाथों पर जामुन के दाग। खुली खिड़कियों से भीतर आती बरसाती हवा। मई में पूरी सड़कों को लाल कर देने वाले गुलमोहर। ऊपर से झरते अमलतास। वह दिल्ली, जिसने खुद को लगातार साबित करना अभी शुरू नहीं किया था। वह बड़ी होती गई और मुझे अपने भीतर कहीं जमा करती गई। लेकिन आज मैं वैसी नहीं रही, जैसी मैंने खुद को उसे दिखाया था। इस साल की गर्मी चार महीने तक बिना किसी माफी के मेरे सीने पर बैठी रही। मेरे पेड़, जो हाल की कटाइयों से बच पाए, पूरी गर्मी चुप खड़े रहे। उन्होंने सुंदर दिखने की कोशिश तक छोड़ दी थी। वे बस जीवित रहने की कोशिश कर रहे थे। चाणक्यपुरी से होकर गुजरो, तब समझोगे कि मैं कैसी थी।

अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेष आज महत्वपूर्ण हैं

विवेक

बुद्ध के दो मुख्य शिष्यों – अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान – के पवित्र अवशेष 1 से 10 जून तक उलानबटोर के गंदन मठ में प्रदर्शनी के लिए भारतीय वायुसेना (ढ्द्रस्न) के एक विशेष विमान से मंगोलिया ले जाए जाएंगे । दो सहस्राब्दियों से अधिक समय से, बौद्ध जगत में अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के नाम अत्यधिक श्रद्धा के केंद्र रहे हैं । गौतम बुद्ध के दो मुख्य शिष्यों के रूप में, वे न केवल बुद्ध के सबसे करीबी आध्यात्मिक साथी थे, बल्कि उनके ज्ञानोदय के बाद धम्म के प्रमुख रक्षक और प्रसारक भी थे । बौद्ध परंपरा के अनुसार, सारिपुत्त और महामोग्गल्लान का जन्म वर्तमान नालंदा के पास, मगध क्षेत्र के पड़ोसी गांवों में एक ही दिन हुआ था । सारिपुत्त का जन्म उपतिस्स गांव में हुआ था, जबकि महामोग्गल्लान का जन्म कोलित गांव में हुआ था । बचपन की दोस्ती के बंधन में बंधे इन दोनों जिज्ञासुओं ने अंततरू परम सत्य की खोज में एक साथ सांसारिक जीवन का त्याग कर दिया । उनकी आध्यात्मिक यात्रा बुद्ध के सानिध्य में पूरी हुई, जहाँ वे जल्द ही प्रारंभिक संघ के दो सबसे प्रतिष्ठित सदस्यों के रूप में उभरे । सारिपुत्त को ज्ञान और सैद्धांतिक विश्लेषण के सर्वोच्च गुरु के रूप में जाना जाता था । बौद्ध ग्रंथ उन्हें ष्असाधारण बौद्धिक स्पष्टताष और ष्करुणा एवं सटीकता के साथ शिक्षाओं को समझाने की अद्वितीय क्षमताष से संपन्न बताते हैं । उन्होंने भिक्षुओं के अनुशासन की देखरेख की, ध्यान साधना का मार्गदर्शन किया और स्वतंत्र रूप से भिक्षुओं को दीक्षित करने वाले पहले अधिकृत शिष्य बने । बुद्ध के सीधे निर्देश के बाद, बुद्ध के पुत्र राहुल को सारिपुत्त द्वारा एक नवदीक्षित भिक्षु (सामनेर) के रूप में दीक्षित किया गया था । उनके नेतृत्व और धम्म पर असाधारण पकड़ के कारण, बुद्ध ने उन्हें ष्धम्म का सेनापतिष (धम्मसेनापति) की उपाधि दी थी । थेरवाद बौद्ध परंपरा के अनुसार, ज्ञान प्राप्त करने के बाद बुद्ध ने तावतिंस स्वर्ग में अपनी माता (जिनका वहां पुनर्जन्म हुआ था) सहित देवताओं को अभिधम्म की शिक्षा दी थी । इस अवधि के दौरान, बुद्ध हर दिन कुछ समय के लिए मानव लोक में लौटते थे, जहाँ वे सारिपुत्त को उन शिक्षाओं का सारांश सुनाते थे, और फिर सारिपुत्त उन शिक्षाओं को व्यवस्थित रूप से जन–जन तक पहुँचाते थे । इसके विपरीत, महामोग्गल्लान को ध्यान और आध्यात्मिक उपलब्धियों के अग्रणी गुरु के रूप में सम्मान प्राप्त था । बौद्ध साहित्य में उन्हें गहन ध्यान शक्तियों और अस्तित्व के विभिन्न लोकों को देखने की क्षमता से युक्त बताया गया है । देवताओं, ब्रह्मों और दुखी अवस्थाओं में कष्ट भोग रहे जीवों के साथ अपने संवादों के माध्यम से, उन्होंने कर्म के सिद्धांतों और संसार की वास्तविकताओं को स्पष्ट किया । उनकी शिक्षाओं ने अनुयायियों को मानवीय कर्मों के नैतिक और आध्यात्मिक परिणामों की स्पष्ट समझ प्रदान की । गौतम बुद्ध ने अरहंत महामोग्गल्लान पर एक शिक्षक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और प्रारंभिक संघ के रक्षक के रूप में गहरा भरोसा किया, जो अक्सर अनुशासन और सामुदायिक नेतृत्व के मामलों में बुद्ध की ओर से कार्य करते थे । उन्होंने देवदत्त द्वारा पैदा किए गए संघ–भेद (विभाजन) को दूर करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे भिक्षुओं को बुद्ध के साथ फिर से एकजुट करने और बौद्ध समुदाय की एकता को बनाए रखने में मदद मिली । पवित्र अवशेष और उनकी चिरस्थायी श्रद्धा अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान का परिनिर्वाण बुद्ध और बौद्ध संघ के लिए एक अत्यंत भावुक क्षण था । अरहंत सारिपुत्त ने बुद्ध के महापरिनिर्वाण से कुछ समय पहले, कत्तिका/कार्तिक (अक्टूबरध्नवंबर) महीने की पूर्णिमा को अंतिम मुक्ति (परिनिर्वाण) प्राप्त की, जबकि परंपरा के अनुसार अरहंत महामोग्गल्लान का परिनिर्वाण लगभग पंद्रह दिन बाद, उसी महीने की अमावस्या को हुआ था । बौद्ध परंपरा में, उन्हें आध्यात्मिक प्राप्ति का पवित्र प्रतीक और ज्ञानोदय का जीवंत स्मरण माना जाता है । इसलिए, अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के पवित्र अवशेष असाधारण महत्व रखते हैं, जो बुद्ध धम्म के त्रिरत्नों में से एक–श्संघश की साक्षात प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करते हैं । विभिन्न बौद्ध संस्कृतियों में, ये पवित्र अवशेष आज भी भक्ति, तीर्थयात्रा और आत्मचिंतन को प्रेरित करते हैं । उनका आदर प्राचीन भारत से आधुनिक विश्व तक बुद्ध की शिक्षाओं की निरंतरता का प्रतीक है । इस गहरी श्रद्धा का एक भव्य नजारा फरवरी 2024 में थाईलैंड में देखा गया, जो हाल के इतिहास के सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध राजकीय समारोहों में से एक था । थाईलैंड की ऐतिहासिक 2024 अवशेष प्रदर्शनी अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेष 23 फरवरी 2024 को पहली बार भारत से बाहर गए, जब थाईलैंड ने बैंकॉक के सनम लुआंग में बुद्ध के पवित्र अवशेषों के साथ–साथ अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेषों की स्थापना के लिए एक भव्य राजकीय समारोह का आयोजन किया था । इस ऐतिहासिक आयोजन की संयुक्त अध्यक्षता सोमदेत फ्रा संघराजा सकल महा संघपरिणायक और प्रधान मंत्री स्रेत्था थाविसिन ने की थी । रॉयल थाई सरकार और भारत सरकार के सहयोग से षांगा–मेकांग पवित्र बुद्ध अवशेषष पहल के तहत आयोजित यह प्रदर्शनी, महा वजिरालोंगकोर्न की छठी–चक्र वर्षगांठ के शुभ अवसर पर आयोजित उत्सवों का हिस्सा थी । भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय और अंतर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (ढ्ढक्चष्ट) ने भारत से भिक्षुओं और शिक्षाविदों को लाने और बैंकॉक के सिल्पकर्न विश्वविद्यालय में एक पूर्ण दिवसीय विपश्यना कार्यक्रम आयोजित करके इस प्रदर्शनी के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई । इस आयोजन ने भारी जन–भक्ति और अंतर्राष्ट्रीय ध्यान आकर्षित किया । बैंकॉक प्रदर्शनी के बाद, इन पवित्र अवशेषों को थाईलैंड के विभिन्न हिस्सों जैसे चियांग माई, उबोन रत्चाथानी और क्राबी ले जाया गया–जिससे देश के सभी क्षेत्रों के लगभग 50 लाख (5 मिलियन) बौद्धों को अवशेषों के दर्शन और श्रद्धा सुमन अर्पित करने का अवसर मिला । मंगोलिया के लिए इन अवशेषों का महत्व क्यों है? अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान के अवशेषों को मंगोलिया ले जाने की प्रासंगिकता श्धम्म वाहकश के रूप में उनकी भूमिका में निहित है–वे प्रारंभिक संघ के ऐसे स्तंभ थे जिनका जीवन बुद्ध की शिक्षाओं के प्रसार और सुरक्षा का साक्षात उदाहरण था । उनके दो मुख्य शिष्यों के पवित्र अवशेष संसार में उस ज्ञानोदय के संरक्षण, व्याख्या और प्रसार के प्रतीक हैं । अरहंत सारिपुत्त और अरहंत महामोग्गल्लान गहन साधना के माध्यम से धम्म की व्यावहारिक अनुभूति का प्रतिनिधित्व करते हैं । एक साथ मिलकर, दोनों शिष्यों ने बौद्ध अभ्यास के पूरक स्तंभों को साकार कियारू ज्ञान और अनुभूति, सिद्धांत और प्रत्यक्ष अनुभव । इसलिए, उनके पवित्र अवशेष उन जीवंत सिद्धांतों के प्रतीक हैं जिनके माध्यम से मुक्ति संभव है, इस प्रकार वे शुद्धतम रूप में सिद्ध संघ का प्रतिनिधित्व करते हैं । उनका सम्मान करना, वास्तव में, मानव इतिहास में बुद्ध के ज्ञानोदय के सफल प्रसार का सम्मान करना है । मंगोलिया के लिए, इन अवशेषों का आगमन असाधारण अर्थ रखता है । मंगोलिया की बौद्ध पहचान ऐतिहासिक रूप से श्रद्धा, विद्वता, संन्यासी अनुशासन और ध्यान परंपरा में रची–बसी रही है । इन पवित्र अवशेषों की उपस्थिति एक पवित्र और प्रत्यक्ष संबंध स्थापित करती है, जो बुद्ध धम्म की जीवंत छवि को पूर्ण करती है । मंगोलिया में उनकी उपस्थिति मंगोलियाई भिक्षु समुदाय (संघ) के लिए एक अत्यंत दुर्लभ और शुभ आशीर्वाद है

संक्षिप्त खबरें

पुलिस पर फायरिंग करने वाला वांछित अभियुक्त मुठभेड़ में गिरफ्ता

लखनऊ, (संवाददाता)। राजधानी लखनऊ के विकासनगर क्षेत्र में पुलिस ने एक वांछित अभियुक्त को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तारी के दौरान अभियुक्त द्वारा पुलिस टीम पर फायरिंग किए जाने के बाद आत्मरक्षा में की गई जवाबी कार्रवाई में उसके पैर में गोली लग गई। घायल अभियुक्त को पुलिस अभिरक्षा में अस्पताल भेजकर उपचार कराया जा रहा है।पुलिस के अनुसार थाना विकासनगर में दर्ज मुकदमा संख्या 95ध्2026 के तहत वांछित चल रहे अभियुक्त सनी यादव को गिरफ्तार करने के लिए विशेष अभियान चलाया जा रहा था। अभियुक्त के विरुद्ध भारतीय न्याय संहिता की विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज है और वह लंबे समय से पुलिस की तलाश में था।रविवार सुबह पुलिस टीम टेढ़ीपुलिया क्षेत्र में अभियुक्त की तलाश और चेकिंग अभियान चला रही थी। इसी दौरान पुलिस को अभियुक्त के आने की सूचना मिली। पुलिस ने उसे रोकने का प्रयास किया, लेकिन गिरफ्तारी से बचने के लिए उसने अवैध हथियार से पुलिस टीम पर फायरिंग शुरू कर दी।पुलिस के मुताबिक अभियुक्त द्वारा चलाई गई पहली गोली थाना प्रभारी विकासनगर के सरकारी वाहन के दरवाजे पर लगी, जबकि दूसरी गोली भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण (जीएसआई) उत्तरी क्षेत्र, लखनऊ परिसर स्थित मैदान की ओर चलाई गई। अचानक हुई फायरिंग से क्षेत्र में अफरा–तफरी का माहौल बन गया।

शादी के छह माह बाद नवविवाहिता की संदिग्ध मौत

लखनऊ, (संवाददाता)।राजधानी लखनऊ के सआदतगंज क्षेत्र में विवाह के महज छह माह बाद एक नवविवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है। मृतका के परिजनों ने पति और ससुराल पक्ष पर दहेज के लिए प्रताड़ित करने तथा फांसी लगाकर हत्या करने का आरोप लगाया है। पुलिस ने तहरीर के आधार पर दहेज हत्या समेत विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी हैपुलिस के अनुसार कानपुर के बगाही टीपी नगर निवासी सुनील कुमार वर्मा ने थाना सआदतगंज में लिखित शिकायत देकर बताया कि उनकी भतीजी का विवाह 9 दिसंबर 2025 को सआदतगंज क्षेत्र के झब्बारन काला फाटक निवासी सागर राजपूत के साथ हुआ था। आरोप है कि विवाह के बाद से ही पति और ससुराल पक्ष के अन्य सदस्य कम दहेज मिलने की बात कहकर मृतका को मानसिक और शारीरिक रूप से प्रताड़ित करते थे। इसके साथ ही कार की मांग को लेकर उस पर लगातार दबाव बनाया जा रहा था।शिकायतकर्ता का आरोप है कि दहेज की मांग पूरी न होने के कारण 30 मई 2026 को ससुराल पक्ष के लोगों ने नवविवाहिता की फांसी लगाकर हत्या कर दी और इसे आत्महत्या का रूप देने का प्रयास किया। घटना की जानकारी मिलने के बाद परिजनों में कोहराम मच गया और उन्होंने पुलिस से न्याय की मांग की।प्राप्त तहरीर के आधार पर थाना सआदतगंज में मुकदमा अपराध संख्या 111/2026 धारा 80(2), 85 भारतीय न्याय संहिता तथा दहेज प्रतिषेध अधिनियम की धारा 3/4 के अंतर्गत अभियोग पंजीकृत किया गया है। सूचना मिलते ही स्थानीय पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल का निरीक्षण किया।

दिल्ली जा रहे तीन विमान बिन बुलाए लखनऊ पहुंचे

लखनऊ, (संवाददाता)। लेह, इंदौर व बंगलूरू से दिल्ली जा रहे विमान खराब मौसम के चलते शनिवार शाम बिन बुलाए लखनऊ पहुंचे। दिल्ली में मौसम खराब होने के कारण इन्हें लखनऊ के चौधरी चरण सिंह अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट डायवर्ट किया गया। एयरपोर्ट सूत्रों ने बताया कि अकासा एयरलाइंस की बंगलूरू से दिल्ली जाने वाली उड़ान क्यूपी–1821 शाम 5:14 बजे डायवर्ट होकर लखनऊ पहुंची। लगभग एक घंटे बाद यह दिल्ली के लिए रवाना हुई। लेह से दिल्ली जा रही इंडिगो की उड़ान 6ई–6430 शाम करीब पांच बजे लखनऊ एयरपोर्ट पर उतरी। लगभग डेढ़ घंटे बाद इसे शाम 6:35 बजे दिल्ली के लिए रवाना किया गया। इंदौर से दिल्ली जा रही एअर इंडिया की उड़ान एआई–2516 शाम 5:21 बजे लखनऊ पहुंची। एक घंटा 10 मिनट तक एयरपोर्ट पर खड़े रहने के बाद इसने शाम 6:30 बजे दिल्ली के लिए उड़ान भरी। पिछले कुछ दिनों से दिल्ली में खराब मौसम के कारण कई विमान डायवर्ट होकर लखनऊ आ चुके हैं।

जून के बिजली बिलों पर बढ़ेगा एफपीपीएएस अधिभार, यूपी के उपभोक्ताओं पर पड़ेगा अतिरिक्त भार

लखनऊ, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश में जून 2026 के बिजली बिलों में उपभोक्ताओं को अतिरिक्त भुगतान करना पड़ सकता है। उत्तर प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड (यूपीपीसीएल) ने ईंधन एवं विद्युत क्रय समायोजन अधिभार (एफपीपीएएस) लागू करने के निर्देश जारी करते हुए सभी श्रेणी के उपभोक्ताओं से जून माह में यह अधिभार वसूलने की प्रक्रिया शुरू करने को कहा है। यह अधिभार मार्च 2026 के दौरान विद्युत खरीद और पारेषण पर हुए अतिरिक्त व्यय की भरपाई के लिए लगाया जा रहा है।यूपीपीसीएल की रेगुलेटरी अफेयर्स इकाई द्वारा जारी आदेश के अनुसार उत्तर प्रदेश विद्युत विनियामक आयोग (यूपीईआरसी) के बहुवर्षीय टैरिफ (वितरण) विनियम, 2025 के तहत एफपीपीएएस की व्यवस्था लागू है। इस व्यवस्था के अनुसार विद्युत वितरण कंपनियों द्वारा किसी माह में किए गए अतिरिक्त विद्युत क्रय तथा पारेषण व्यय का समायोजन तीन माह बाद उपभोक्ताओं के बिजली बिलों में किया जाता है। इसी प्रावधान के तहत मार्च 2026 में हुए अतिरिक्त खर्च का भार जून 2026 के बिलों में जोड़ा जाएगा।मुख्य अभियंता (रेगुलेटरी अफेयर्स इकाई) पंकज सक्सेना द्वारा जारी पत्र में कहा गया है कि विनियम की धारा 16(4) के अनुसार मार्च 2026 के लिए गणना किए गए एफपीपीएएस की दर 10 प्रतिशत निर्धारित की गई है। यह अधिभार प्रदेश के सभी विद्युत उपभोक्ताओं पर लागू होगा। इसके लिए निदेशक (सूचना प्रौद्योगिकी) को आवश्यक तकनीकी व्यवस्था सुनिश्चित करने तथा विस्तृत गणना पत्रक निगम की वेबसाइट पर उपलब्ध कराने के निर्देश दिए गए हैं।एफपीपीएएस बिजली क्षेत्र में ईंधन लागत, खुले बाजार से बिजली खरीद, पारेषण शुल्क और अन्य परिवर्तनीय खर्चों में होने वाले उतार–चढ़ाव की भरपाई का एक नियामकीय तंत्र है। जब वितरण कंपनियों को अनुमानित लागत से अधिक खर्च वहन करना पड़ता है, तो उसका एक हिस्सा नियामक आयोग की स्वीकृत व्यवस्था के तहत उपभोक्ताओं के बिलों में समायोजित किया जाता है। इसी प्रकार लागत कम होने की स्थिति में उपभोक्ताओं को राहत भी दी जा सकती है। ऊर्जा क्षेत्र के जानकारों का कहना है ।

पीडीए आरक्षण घोटाला संविधान प्रदत्त अधिकारों की लूट, भाजपा सरकार जवाब दे : राकेश मौर्य

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में समाजवादी पार्टी द्वारा सोमवार को नगर के एक होटल में आयोजित प्रेस वार्ता में जिलाध्यक्ष राकेश मौर्य ने भाजपा सरकार पर आरक्षण व्यवस्था को कमजोर करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि कथित ष्पीडीए आरक्षण घोटालाष पिछड़े, दलित और आदिवासी समाज के संविधान प्रदत्त अधिकारों की सरकारी लूट है। राकेश मौर्य ने कहा कि बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा दिया गया संविधान देश की नींव है और आरक्षण सामाजिक समता एवं समान अवसर का महत्वपूर्ण माध्यम है। उन्होंने आरोप लगाया कि प्रदेश सरकार विभिन्न भर्तियों में आरक्षित वर्गों के अधिकारों का हनन कर रही है। उन्होंने दावा किया कि 22 भर्ती परीक्षाओं में 11,514 से अधिक आरक्षित पदों पर अनियमितताएं हुई हैं। इनमें 69 हजार शिक्षक भर्ती, लेखपाल भर्ती, ग्राम पंचायत अधिकारी भर्ती, कृषि प्राविधिक सहायक भर्ती, वन एवं वन्यजीव रक्षक भर्ती सहित कई अन्य भर्तियां शामिल हैं। सपा जिलाध्यक्ष ने कहा कि पार्टी ने इन मामलों का प्रमाण सहित दस्तावेज तैयार किया है और इसे जनता के बीच लेकर जाएगी। उन्होंने कहा कि आरक्षण में कथित गड़बड़ियां इस बात का प्रमाण हैं कि संविधान और आरक्षण दोनों खतरे में हैं। समाजवादी पार्टी पीडीए समाज के युवाओं, महिलाओं और वंचित वर्गों के बीच इस मुद्दे को प्रमुखता से उठाएगी। प्रेस वार्ता में राकेश मौर्य ने पेपर लीक, बढ़ती महंगाई, पेट्रोलियम पदार्थों की कीमतों में वृद्धि, विद्युत कटौती, कानून–व्यवस्था की स्थिति तथा कथित फर्जी एनकाउंटर जैसे मुद्दों पर भी सरकार को घेरा। उन्होंने बताया कि इन मुद्दों को लेकर समाजवादी पार्टी 5 जून को जिला मुख्यालय पर धरना–प्रदर्शन करेगी। इस अवसर पर पूर्व मंत्री शैलेंद्र यादव ललई, विधायक लकी यादव, विधायक पंकज पटेल सहित पार्टी के कई पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

होमगार्ड भर्ती परीक्षा परिणाम की तारीख हुई घोषित, 41 हजार से ज्यादा पदों पर होनी हैं नियुक्तियां

लखनऊ, (संवाददाता)। प्रदेश में होमगार्ड जवानों के 41,424 पदों पर भर्ती परीक्षा का अंतिम परिणाम सितंबर में जारी होगा। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जवानों को सीपीआर और फर्स्ट एड की ट्रेनिंग देने का निर्देश दिया। वह रविवार को होमगार्ड संगठन की समीक्षा कर रहे थे। उन्होंने कहा कि होमगार्ड संगठन प्रदेश की आंतरिक सुरक्षा, कानून–व्यवस्था, आपदा प्रबंधन तथा जनसेवा का महत्वपूर्ण स्तंभ है। इसको अधिक सक्षम, प्रशिक्षित, तकनीकी दक्ष और आधुनिक बनाना चाहिए। पुलिस व होमगार्ड का जवान समाज का फर्स्ट रिस्पांडर होता है। किसी भी घटना में पीड़ित के पास सबसे पहले यही पहुंचते हैं, इसलिए इन्हें सीपीआर व फर्स्ट एड की अनिवार्य रूप से ट्रेनिंग दी जाए और गोल्डन ऑवर के महत्व के बारे में भी बताया जाए। बैठक में बताया गया कि 3812 होमगार्डों को आपदा मित्र के रूप में प्रशिक्षित किया गया है। वहीं 1,091 स्वयंसेवकों को अग्नि बचाव तथा 425 को बाढ़ बचाव

कार्यों के लिए विशेष प्रशिक्षण दिया गया है। चयनित अभ्यर्थियों को पुलिस के प्रशिक्षण संस्थानों में 90 दिवसीय आधारभूत प्रशिक्षण दिया जाएगा। विभाग की 104.80 करोड़ रुपये लागत वाली 20 निर्माण परियोजनाओं का कार्य प्रगति पर है। सेवाकाल में मृत्यु की स्थिति में नामित आश्रित को 5 लाख रुपये की अनुग्रह सहायता दी जा रही है। दिसंबर 2020 से अबतक 3153 मामलों में 157.65 करोड़ रुपये की अनुग्रह राशि वितरित की जा चुकी है। अप्रैल 2022 से अब तक 125 दिवंगत होमगार्ड स्वयंसेवकों के आश्रितों को विभिन्न बैंकिंग बीमा योजनाओं के माध्यम से 30 लाख से 45 लाख रुपये तक की बीमा सहायता प्राप्त हुई है। केंद्रीय प्रशिक्षण संस्थान को राज्य स्तरीय अत्याधुनिक संस्थान के रूप में विकसित करने की योजना है।

यूरोलॉजी विभाग में दवा घोटाले में फंसे कर्मचारियों को हटाया

लखनऊ, (संवाददाता)। केजीएमयू के यूरोलॉजी विभाग में असाध्य योजना के तहत कैंसर मरीजों को मिलने वाली महंगी दवा व इंजेक्शन में घोटाले के आरोप में दवा वितरण में लगे सभी कर्मचारियों को हटा दिया गया है। इन्हें विभागाध्यक्ष कार्यालय से संबद्ध किया गया है। साथ ही, जांच पूरी होने तक लखनऊ न छोड़ने के निर्देश दिए गए हैं। यूरोलॉजी विभाग में असाध्य योजना के तहत पंजीकृत गरीब कैंसर मरीजों का इलाज मुफ्त होता है, मगर मरीजों के नाम पर महंगी दवाओं की फर्जी खपत दिखाकर सरकारी धन का दुरुपयोग किया गया। बजट के आंकड़ों ने इस शक को पुख्ता किया। अक्तूबर– नवंबर में जहां दवाओं की खपत लगभग 10 लाख रुपये थी, वहीं फरवरी में यह करीब 40 लाख और मार्च में 45 लाख रुपये पार कर गया। महंगी दवाओं के इस तेजी से बढ़ते बजट पर जब अधिकारियों को शक हुआ, तो उन्होंने बिलों और डॉक्टरों के परचों का ऑडिट शुरू कराया। ऑडिट में भारी गड़बड़ियां मिलीं। कागजों पर कुछ मरीजों को महीने में 4 से 5 ऐसे प्रोटीन और ताकत के इंजेक्शन लगा दिए गए, जो नियमतः 6 महीने में केवल एक बार ही लगाए जाते हैं। इस एक इंजेक्शन की कीमत 8 से 10 हजार रुपये है। इसके अलावा, कैंसर मरीजों को भर्ती कर ही यह दवाएं लगाने का नियम है, जिसका पूरी तरह उल्लंघन किया गया। अधिकारियों ने शुरुआती जांच के आधार पर करीब 2 करोड़ रुपये की दवाओं के घपले की आशंका जताई है। केजीएमयू के प्रवक्ता डॉ. केके सिंह ने बताया कि जांच कमेटी अपनी रिपोर्ट सोमवार तक सौंपेगी, जिसके बाद दोषी कर्मचारियों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई जाएगी, उनसे रिकवरी होगी और उनकी सेवा भी समाप्त की जाएगी।

विवादित ढांचों के पास फारसी शिलापट मिलने का दावा

लखनऊ, (संवाददाता)। मलिहाबाद स्थित कसमंडी कलां स्थित विवादित ढांचों के पास मुस्लिम समुदाय के लोग लंबे समय से नमाज अदा करते आए हैं। स्थानीय लोगों का दावा है कि ढांचे के पास सफाई और उसकी देखरेख मुस्लिम समुदाय के लोग ही करते रहे हैं। दोनों ढांचों के पास ही करीब 18 बीघे में कब्रिस्तान भी है। मुस्लिम समुदाय की ओर से दावा किया गया है कि एक हफ्ते पहले सफाई के दौरान उन्हें सफेद फारसी शिलापट मिला था, जिस पर 1246 का जिक्र है और उस पर मर्सिया (शोकगीत) लिखा हुआ है। इस वजह से यहां मकबरे और मस्जिद का ही स्वरूप है। पुरातत्व विभाग ने भी प्रथम सर्वे में ढांचे के अंदर कब्र और इसका स्वरूप मस्जिद बताया है। उधर, लाखन और सुहेलदेव आर्मी का दावा है कि यह स्थल 11वीं सदी के प्रतापी नागवंशी शासक महाराजा कंसा पासी का ऐतिहासिक किला और प्राचीन शिव मंदिर था। ढांचों की दीवारों व खंभों पर प्राचीन हिंदू स्थापत्य कलाकृतियां अंकित है। कसमंडी कला के जिला पंचायत सदस्य पन्ना लाल रावत ने बताया कि दो वर्ष पहले से मुस्लिम समाज के लोग नमाज अदा करते रहे हैं, लेकिन क्षेत्र महाराजा कंसा पासी का बसाया हुआ है। दोनों समुदाय के दावों के बीच बहरहाल शांति व्यवस्था कायम है। यहां पुलिस बल की संख्या में कमी कर दी गई है और निगरानी से ड्रोन को भी हटा दिया गया है। मंदिर का दावा करने वाले संगठन कार्बन डेटिंग की मांग कर रहे हैं। पुरातत्व विभाग के अनुसार, कार्बन डेटिंग के लिए विशेष तरह के उपकरण की जरूरत पड़ती है। विभाग की ओर से यह कराना संभव नहीं है।

भीषण गर्मी मे भी राम मंदिर मे उमड़ रही श्रद्धालुओ की भारी संख्या में भीड़

अयोध्या।तेज धूप और भीषण गर्मी के बावजूद भी राम जन्मभूमि मंदिर में राम भक्तों की भारी संख्या में भीड़ देखी जा रही है।और यह भी पिछले दिनों की अपेक्षा लगातार बढ़ ही रही है।रविवार को लगभग 2 लाख श्रद्धालुओं ने राम मंदिर सहित अन्य प्रमुख मंदिरों का दर्शन पूजन किया।भीड़ का आलम यह रहा कि एसपी सुरक्षा खुद कमान संभाल रहे है। भीड़ को देखते हुए गत दिनों की अपेक्षा इधर सुरक्षा कर्मियों की संख्या में भी बढ़ोतरी की गई है।देखा जाए तो इस समय जहां शनिवार और रविवार को दो दिन वीकेंड के चलते भीड़ बढ़ना स्वभाविक था वही अब बच्चों की छुट्टियों के चलते भी अब और भी भारी संख्या में रामनगरी आने वाले श्रद्धालुओं के अंदाजा लगाया जा रहा है।क्योंकि पिछले वर्षों की भांति इस वर्ष भी मथुरा,वाराणसी जाने वाले श्रद्धालु अयोध्या भी आएंगे और रामनगरी में भी भारी संख्या में होगी इसको देखते हुए अभी से ही पुलिस प्रशासन भी रणनीति बनाने में जुट गई है।इस प्रचंड गर्मी में रविवार को छोड़े तो सोमवार को भी भारी संख्या में श्रद्धालुओं की भी देखी गई जो

दोपहर के दौरान भी बनी रही।सुबह शाम राम मंदिर के अलावा हनुमानगढी, कैकई भवन, राम की पैड़ी,जानकी महल ट्रस्ट, नागेश्वर नाथ सहित अन्य प्रमुख मंदिरों पर श्रद्धालुओं की भारी संख्या में भीड़ दिखी। इस संबंध में सीओ अयोध्या आशुतोष तिवारी ने खुद माना कि इधर पिछले तीन–चार दिनों से श्रद्धालुओं के भीड़ में बढ़ोतरी हुई है और आगे उम्मीद जताई जा रही है कि बच्चों की छुट्टी होने के चलते रामनगरी में और भी भीड़ होगी।जिसके चलते हनुमानगढी, कनक भवन, राम की पैड़ी, सहित अन्य प्रमुख मंदिरों पर सुरक्षाकर्मियों की तैनाती की गई है और वहां की सारी गतिविधियों को सीसीटीवी कैमरे के माध्यम से देखी जा रही है।बताया कि इधर गर्मी के चलते श्रद्धालुओं के डूबने की संख्या में इजाफा हुआ है।इसके लिए भी सरयू नदी के विभिन्न घाटों पर पर्याप्त संख्या में जल पुलिस एसडीआरएफ की भी तैनाती की गई है। क्योंकि आने वाले दिनों में श्रद्धालुओं की भीड़ इन घाटों पर भी दिखाई देगी।

कर्तव्य में लापरवाही पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक की बड़ी कार्रवाई, तीन पुलिसकर्मी निलंबित

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में पुलिस विभाग में अनुशासन बनाए रखने के लिए वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह ने सोमवार को बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया। इन पर कर्तव्य निर्वहन में घोर लापरवाही एवं स्वेच्छाचारिता बरतने का आरोप है।निलंबित किए गए पुलिसकर्मियों में थाना बक्सा में तैनात मुख्य आरक्षी राम प्रवेश यादव, पुलिस लाइन जौनपुर में तैनात आरक्षी शमशाद अली तथा आरक्षी राहुल कुमार शामिल हैं। पुलिस अधीक्षक ने बताया कि विभागीय जांच एवं उपलब्ध तथ्यों के आधार पर संबंधित पुलिसकर्मियों द्वारा ड्यूटी के प्रति गंभीर लापरवाही और मनमाना रवैया अपनाए जाने की पुष्टि हुई थी। मामले की गंभीरता को देखते हुए तत्काल प्रभाव से तीनों को निलंबित करने का आदेश जारी किया। एसएसपी की इस कार्रवाई को पुलिस विभाग में अनुशासन और जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है। विभागीय अधिकारियों का कहना है कि पुलिस कार्यप्रणाली में लापरवाही किसी भी स्थिति में स्वीकार नहीं की जाएगी और दोषी पाए जाने वाले कर्मियों के विरुद्ध सख्त कार्रवाई जारी रहेगी। पुलिस अधीक्षक की इस कार्रवाई के बाद पुलिस महकमे में स्पष्ट संदेश गया है कि कर्तव्य निर्वहन में किसी भी प्रकार की लापरवाही या स्वेच्छाचारिता पर कड़ी कार्रवाई की जाएगी।

जौनपुर में 17 चिकित्सा अधिकारियों का स्थानांतरण, नए तैनाती स्थलों पर तत्काल कार्यभार ग्रहण करने के निर्देश

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में स्वास्थ्य विभाग में प्रशासनिक व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से जनपद के 17 चिकित्सा अधिकारियों का तत्काल प्रभाव से स्थानांतरण एवं समायोजन किया गया है। मुख्य चिकित्सा अधिकारी ने सोमवार जानकारी के अनुसार उत्तर प्रदेश शासन एवं महानिदेशक चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएं के निर्देशों के अनुपालन में की गई है। जारी आदेश के तहत सभी स्थानांतरित चिकित्सा अधिकारियों को अपने नवीन तैनाती स्थल पर तत्काल कार्यभार ग्रहण करने के निर्देश दिए गए हैं। साथ ही संबंधित नियंत्रक अधिकारियों को उन्हें शीघ्र कार्यमुक्त करने के लिए कहा गया है। आदेश में यह भी स्पष्ट किया गया है कि मई 2026 का वेतन संबंधित चिकित्सकों को उनके नवीन तैनाती स्थल से आहरित किया जाएगा। स्थानांतरित चिकित्सकों में डॉ. देवेन्द्र पाल को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सुजानगंज से प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र बेलवार, डॉ. धर्मेन्द्र प्रताप सिंह को सीएचसी डोभी से पीएचसी हीरापुर मचहटी, डॉ. विवेक यादव को डोभी से भन्नौर तथा डॉ. कृष्ण कुमार को डोभी से बर्राह भेजा गया है। इसी प्रकार डॉ. गौरव सिंह को सीएचसी बदलापुर से पीएचसी नाभीपुर, डॉ. कोविदेन्द्र त्रिपाठी को बदलापुर से गद्दोपुर, डॉ. अंकित शर्मा को रामनगर से गुतवन तथा डॉ. रमेश चन्द्रा को धर्मापुर से सीएचसी सुइथाकला स्थानांतरित किया गया है। इसके अलावा डॉ. ओम प्रकाश को पीएचसी सतहरिया से सीएचसी मेहरावां, डॉ. महेश प्रसाद बिन्द को सतहरिया से तरहटी, डॉ. संजीव यादव को शाहगंज से सीएचसी आदमपुर तथा डॉ. रविराज को बदलापुर से सीएचसी आदमपुर भेजा गया है। डॉ. रोहित लाल को सीएचसी आदमपुर से पीएचसी समसपुर, डॉ. राकेश कुमार को राजकीय पुरुष चिकित्सालय शाहगंज से सीएचसी मड़ियाहूं, डॉ. रन बहादुर यादव को शाहगंज से पीएचसी गभिरन, डॉ. मनोज गौतम को सीएचसी सिरकोनी से पीएचसी परियावां तथा डॉ. फहीम अहमद को ट्रॉमा सेंटर हौज से पीएचसी रंजीतपुर स्थानांतरित किया गया है। स्वास्थ्य विभाग के इस व्यापक फेरबदल को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

जौनपुर में सीएनजी कंटेनर और पेंट लदे ट्रक की टक्कर, चालक को जीवित निकाला गया

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में मंगलवार सुबह लाइनबाजार क्षेत्र के सिहीपुर स्थित लखनऊ–बनारस हाईवे पर IOAGPL के सीएनजी लोडेड कंटेनर और पेंट लदे ट्रक के बीच टक्कर हो गई। दुर्घटना में ट्रक चालक केबिन में फंस गया, जबकि सीएनजी कंटेनर से गैस रिसाव शुरू हो गया। घटना की सूचना मिलते ही फायर स्टेशन चौकियां से अग्निशमन दल तत्काल मौके पर पहुंचा। अग्निशमन द्वितीय अधिकारी के नेतृत्व में राहत एवं बचाव कार्य शुरू किया गया। फायर कर्मियों ने अथक प्रयास करते हुए ट्रक के केबिन में फंसे चालक को सुरक्षित और जीवित बाहर निकाला तथा एम्बुलेंस की सहायता से उपचार के लिए अस्पताल भेजा। साथ ही IOAGPL की तकनीकी टीम से संपर्क कर सीएनजी कंटेनर में हो रहे गैस रिसाव को पूरी तरह बंद कराया गया। समय रहते राहत एवं बचाव कार्य होने से किसी प्रकार की जनहानि नहीं हुई और एक बड़ा हादसा टल गया। घटनास्थल पर फायर स्टेशन सेकेंड ऑफिसर अनिल कुमार अपनी टीम के साथ मौजूद रहे। राहत कार्य में एलएफएम धर्मेश राय, चालक कुलदीप पाण्डेय फायरमैन धर्मेंद्र कुमार, रविकांत, रविन्द्र कुमार तथा फायरमैन चालक सनोज कुमार ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्थानीय पुलिस भी मौके पर मौजूद रही और यातायात व्यवस्था तथा सुरक्षा प्रबंधों में सहयोग किया।

अयोध्या में नयाघाट चौकी क्षेत्र में अतिक्रमण का बोलबाला, श्रद्धालु परेशान

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या।थाना कोतवाली अयोध्या के नयाघाट चौकी क्षेत्र के आसपास अतिक्रमण लगातार बढ़ता जा रहा है। लता चौक से लेकर सरयू पुराने पुल तक सड़क किनारे ठेले और दुकानों का कब्जा होने से आम लोगों और श्रद्धालुओं को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है।स्थानीय लोगों का आरोप है कि यह अतिक्रमण खुलेआम पुलिस चौकी के संरक्षण में हो रहा है और सुविधा शुल्क लेकर ठेले लगवाए जा रहे हैं। हालांकि प्रशासन की ओर से इस संबंध में कोई आधिकारिक बयान सामने नहीं आया है।नयाघाट क्षेत्र धार्मिक और पर्यटन दृष्टि से बेहद महत्वपूर्ण माना जाता है। यहां प्रतिदिन हजारों श्रद्धालु सरयू स्नान और रामनगरी दर्शन के लिए पहुंचते हैं, लेकिन सड़क पर फैले अतिक्रमण के कारण यातायात व्यवस्था पूरी तरह प्रभावित हो रही है। सबसे अधिक दिक्कत लता मंगेशकर चौक और धर्म पथ पर देखने को मिल रही है,जहां श्रद्धालुओं के लिए बना सेल्फी प्वाइंट अब अव्यवस्था का केंद्र बनते जा रहे हैं।इसके अलावा गोल्फ कार्ट चालकों की मनमानी भी लोगों की परेशानी बढ़ा रही है। सड़क पर अतिक्रमण और अव्यवस्थित यातायात के कारण पैदल चलने वालों को भी जोखिम उठाना पड़ रहा है।स्थानीय नागरिकों का कहना है कि कई बार शिकायत के बावजूद प्रशासन की आंखें नहीं खुल रही हैं। स्थानीय निवासियों ने जिला प्रशासन से अभियान चलाकर अतिक्रमण हटाने, गोल्फ कार्ट संचालन को व्यवस्थित करने की मांग की है।

पीड़ित परिवार से जिला अस्पताल मिलने पहुचे सदर विधायक वेद प्रकाश गुप्ता

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या।थाना कैंट क्षेत्र के ककरही बाजार में हुई हत्या की घटना के बाद पीड़ित परिवार से मिलने अयोध्या विधायक वेद प्रकाश गुप्ता जिला अस्पताल पहुंचे।मंगलवार को विधायक ने अस्पताल में भर्ती घायल महिला का हालचाल जाना और चिकित्सकों से उपचार की जानकारी ली।उन्होंने घायल महिला को बेहतर चिकित्सा सुविधाएं उपलब्ध कराने के निर्देश दिए।विधायक ने पीड़ित परिवार को हर संभव सहायता और सहयोग का आश्वासन दिया।इस दौरान जिला अस्पताल के सीएमएस और ऑर्थोपेडिक सर्जन डॉ. आशीष श्रीवास्तव भी मौजूद रहे।चिकित्सकों ने विधायक को घायल महिला की स्वास्थ्य स्थिति और उपचार की प्रगति से अवगत कराया। बताते चले कि यह घटना सोमवार को थाना कैंट के ककरही बाजार मे घटी थी।जहां दो दिन पहले पारिवारिक विवाद हिंसक हो गया था।शौचालय को लेकर हुए विवाद में छोटे भाई ने बड़े भाई पर हमला कर उसकी हत्या कर दी थी।बीच–बचाव करने पहुंची मृतक की पत्नी भी हमले में गंभीर रूप से घायल हो गई थी, जिसका इलाज जिला अस्पताल में चल रहा है।पुलिस ने मामले में कार्रवाई करते हुए चारों आरोपियों को गिरफ्तार कर लिया है और आगे की विधिक कार्रवाई जारी है।

बीएसए कर्मियों द्वारा आयोजित हुआ विशाल भंडारे का आयोजन

अयोध्या। बड़े मंगलवार पर शहर से लेकर ग्रामीण अंचलों तक जगह–जगह भक्त जनों द्वारा विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।जहां पर दोपहर से ही देर रात तक हनुमान जी के प्रसाद के लिए भक्तों की भारी संख्या में भीड़ देखी गई।इसी कड़ी में बीएसए कार्यालय के कर्मियों की ओर से भी विशाल भंडारे का आयोजन किया गया।इसका शुभारंभ बीएसए लालचंद ने बजरंगबली के चित्र पर दीप प्रज्वलित तथा माल्यार्पण कर किया।बताते चले इससे पहले कार्यालय परिसर में सुंदर कांड का भी आयोजन हुआ।भंडारे मे भारी संख्या में श्रद्धालु बजरंगबली के प्रसाद को ग्रहण करते हुए दिखाई दिए। इस मौके पर पूर्व मेयर ऋषिकेश उपाध्याय,

पूर्व भाजपा महानगर अध्यक्ष अभिषेक,भाजपा जिला अध्यक्ष राधेश्याम त्यागी,एडी बेसिकध्डीआईओएस अंबेडकर नगर कौस्तुभ कुमार सिंह के साथ–साथ गया प्रसाद तिवारी,विष्णु प्रताप सिंह, प्रदीप कुमार,शितांशु,विकास कमल सिंह, रितु दुबे,धीरज,अवधेश कुमार पांडे, एसआरजी डाक्टर अम्बिकेश त्रिपाठी,अंकुर सिंह,मुकुल, आदर्श, विमलेंद्र मिश्रा,कृपाराम, अनिल सिंह, प्रमोद सिंह के अलावा बीएसए, एडी बेसिक, डीआईओएस, जेडी,डीडीआर ऑफिस के समस्त स्टाफ व कर्मी मौजूद रहे।।

'मेधावी छात्र सम्मान समारोह का हुआ आयोजन'

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव' 'शाहजहांपुर' सोमवार को मेधावी छात्र सम्मान समारोह विकास भवन सभागार में आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में ददरौल विधानसभा क्षेत्र के विधायक अरविन्द

कुमार सिंह उपस्थित रहे,व अन्य गणमान्य के रूप में जिला सहकारी बैंक लि0 अध्यक्ष व प्रतिनिधि जे0पी0एस0 राठौर मा0 मंत्री सहकारिता उ0प्र0 शासन डीपीएस राठौर,भ

तालाबों में होगी मोती की खेती किसानों की चमकेगी किस्मत

भदोही, (संवाददाता)। जिले में अब मोती की खेती से किसानों की जिंदगी चमकेगी। 50 प्रतिशत अनुदान के साथ किसानों को नई राह मिलेगी। मोती संवर्धन योजना के तहत किसानों की आय बढ़ाने के उद्देश्य से मोती की खेती को बढ़ावा दिया जा रहा है। पायलट प्रोजेक्ट के तहत पहली बार इसकी शुरूआत की जा रही है। तालाबों में मोती की खेती संग किसान मछली का पालन भी कर सकेंगे। जिले में वैसे तो 1250 से अधिक सरकारी तालाब हैं। इसके अलावा लघु सिंचाई, कृषि विभाग की तरफ से खेत तालाब योजना में तालाबों की खोदाई कराई जाती है। जिसका उद्देश्य जल स्तर को सुधारना। अब जल स्तर सुधार के साथ ही किसान मत्स्य पालन कर मोती का कारोबार करेंगे।

भीषण गर्मी तथा तेज धूप मे जरुरत पडने पर ही निकले लोग - सीएमओ

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या।इस समय हीट स्ट्रोक की संभावनाएं बढ़ी हुई है।हीट स्ट्रोक से बचने के लिए सीएमओ डॉ देवेंद्र कुमार भिटौरिया ने लोगों से अपील किया है कि इस दौरान भीषण गर्मी तथा धूप में लोग कोशिश यही करें कि कम से कम अपने घरों से निकले।अगर घर से निकलना बहुत जरूरी है तो लोग अपने शरीर को पूरे तरीके से ढक कर छाता, टोपी गमछे काले चश्मो का प्रयोग करें जिससे वे भिसार गर्मी और तेज धूप से बचें।बताया कि लोगो को लू तभी लगती है।जब शराब की लत हृदय रोग पुरानी बीमारियों मोटापा, पार्किंसंस रोग अधिक उम्र अनियंत्रित मधुमेह हो।बताया कि हीट स्ट्रोक के कुछ लक्षण भी दिखाई देते है।जिसमे खासकर गर्म लाल शुष्क त्वचा का होना,पसीना न आना, तेज पल्स होना,उथले श्वास गति में तेजी,व्यवहार में परिवर्तन,भ्रम की स्थिति,सिरदर्द, मितली, थकान और कमजोरी होना चक्कर आना,मूत्र न होना अथवा इसमें कमी मुख्य लक्षण है।जिसके चलते उच्च तापमान से शरीर के आंतरिक अंगों विशेष रूप से मस्तिष्क को नुकसान पहुंचाता है तथा शरीर में उच्च रक्तचाप उत्पन्न करता हैं।

मनुष्य के हृदय के कार्य पर प्रतिकूल प्रभाव उत्पन्न होता हैं।जो लोग एक या दो घण्टे से अधिक समय तक 40.6 डिग्री सेल्सियस 105 डिग्री एफ या अधिक तापमान अथवा गर्म हवा में रहते है तों उनके मस्तिष्क में क्षति होने की संभावना प्रबल हो जाती है।हीट वेव की स्थिति शरीर की कार्य प्रणाली पर प्रभाव डालती है, जिससे मृत्यु भी हो सकती है।बताया कि हीट वेव ध लू से बचने के लिए प्रचार माध्यमों पर हीट वेवध्लू की चेतावनी पर ध्यान दें।अधिक से अधिक पानी पियें, यदि प्यास न लगी हो तब भी हल्के रंग के पसीना शोषित करने वाले हल्के वस्त्र पहनें।धूप के चश्मे, छाता, टोपी, व चप्पल का प्रयोग करें।अगर आप खुले में कार्य करते है तो सिर, चेहरा, हाथ पैरो को गीले कपड़े से ढके रहें तथा छाते का प्रयोग करें। लू से प्रभावित व्यक्ति को छाया में लिटाकर सूती गीले कपड़े से पोछे अथवा नहलाये तथा चिकित्सक से सम्पर्क करें।यात्रा करते समय पीने का पानी अपने साथ ले जाए।ओ0आर0एस0, घर में बने हुये पेय पदार्थ जैसे लस्सी, चावल का पानी (माड), नींबू पानी, छाछ आदि का उपयोग करें, जिससे कि शरीर में पानी की कमी की भरपाई हो सके।हीट स्ट्रोक, हीट रैश, हीट कैम्प के लक्षणों जैसे कमजोरी, चक्कर आना, सिरदर्द, उबकाई, पसीना आना, मूर्छा आदि को पहचानें।यदि मूर्छा या बीमारी अनुभव करते है तो तुरन्त चिकित्सीय सलाह लें।अपने घरों को ठंडा रखें, पर्दे दरवाजे आदि का उपयोग करें। तथा शामध्रात के समय घर तथा कमरों को ठंडा करने हेतु इसे खोल दें।पंखे, गीले कपड़ों का उपयोग करें तथा बारम्बार स्नान करें।कार्यस्थल पर ठण्डे पीने का पानी रखेंध्उपलब्ध करायें।कर्मियों को सीधी सूर्य की रोशनी से बचने हेतु सावधान करें।श्रमसाध्य कार्यों को ठंडे समय में करनेध्कराने का प्रयास करें।घर से बाहर होने की स्थिति में आराम करने की समयावधि तथा आवृत्ति को बढ़ायें।

गर्भस्थ महिला कर्मियों तथा रोगग्रस्त कर्मियों पर अतिरिक्त ध्यान देना चाहिए।उन्होंने लू से बचाव हेतु कुछ सावधानियां भी बरतने को कहा है। कहा है कि पालतू जानवरों एवं बच्चों को कभी भी बन्दध्खड़ी गाडियों में अकेला न छोंडे।दोपहर 12 से 03 बजे के मध्य सूर्य की रोशनी में जाने से बचें। सूर्य के ताप से बचने के लिये जहां तक संभव हो घर के निचली मंजिल पर रहें।गहरे रंग के भारी तथा तंग कपड़ें न पहनें।जब बाहर का तापमान अधिक हो तब श्रमसाध्य कार्य न करें।अधिक प्रोटीन तथा बासी एवं संक्रमित खाद्य एवं पेय पदार्थों का प्रयोग न करें। अल्कोहल, चाय, व कॉफी पीने से परहेज करें।

सहयोग सनातन सेना द्वारा केसरिया भवन पर मनोज कृष्ण श्रीवास्तव की अगुवाई मे बैठक सम्पन्न

अयोध्या।भारतीय केसरिया वाहिनी एवं सहयोग चेरीटेबल ट्रस्ट के संयुक्त तत्वाधान में सहयोग सनातन सेना द्वारा सीतापुर रोड स्थित केसरिया भवन में बैठक सम्पन्न हुई। बैठक की सहयोग चेरीटेबल ट्रस्ट के संस्थापक अध्यक्ष लक्ष्मी प्रकाश दीक्षित द्वारा की गयी।बैठक मे सहयोग सनातन सेना द्वारा चलाये जा रहे विभिन्न सामाजिक कार्यक्रमों की प्रगति पर चर्चा की गयी और आगामी कार्यक्रमो की रूपरेखा तैयार की गयी।उक्त कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि के रुप मे मौजूद व मुख्य वक्ता भारतीय केसरिया वाहिनी के राष्ट्रीय अध्यक्ष व सहयोग सनातन सेना के राष्ट्रीय संरक्षकध्मार्गदर्शक मनोज कृष्ण श्रीवास्तव जी रहे, गुडिया निगम को राष्ट्रीय अध्यक्ष सहयोग सनातन सेना नियुक्त किया गया वही प्रदेश अध्यक्ष बबलू पांडेय, प्रदेश महासचिव योगेन्द्र शुक्ला, नगर उपाध्यक्ष लक्ष्मी कांत अवस्थी, नगर महासचिव अभय शुक्ला, जिला उपाध्यक्ष राजीव सिंह चौहान, जिला उपाध्यक्ष राम मिलन सिंह ,बजरंग सोनकर वही भारतीय केसरिया वाहिनी से संबंधित सभी संगठनों का संबंधित कार्य को करने के लिए अमित अग्रवाल संयोजक नियुक्त किया गया हैं युवक विभाग से रवि कुमार भी उपस्थित रहे और मनोज कृष्ण श्रीवास्तव जिन्होने अपने उड़द्घ्बोधन में मंदिरो के जीर्णोद्धार व मंदिरो को सरकार के हस्तक्षेप से पूर्णतः मुक्त करने की बात कही।सभी पदाधिकारियो का उत्साहवर्धन किया इस अवसर पर दर्जनों कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

'कन्या भ्रूण हत्या असुरक्षित गर्भपात एवं प्रसव के विरुद्ध जनजागरूकता अभियान चलाएगी रेड क्रॉस सोसाइटी'

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव'

'शाहजहांपुर–' मुख्य चिकित्सा अधिकारी कार्यालय के प्रांगण में स्थित इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के कार्यालय में ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं के साथ रेड क्रॉस सोसाइटी द्वारा कन्या भ्रूण हत्या एवं असुरक्षित गर्भपात के विरुद्ध जन जागरूकता अभियान पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी के सचिव एवं पूर्व राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन मातृनगर समीक्षक दल के चिकित्सक तथा आशा प्रशिक्षक डॉ. विजय जौहरी ने कन्या भ्रूण हत्या, अवैध गर्भपात एवं असुरक्षित प्रसव को मातृ मृत्यु के प्रमुख कारणों में शामिल बताते हुए चिंता व्यक्त की। डॉ विजय जौहरी ने बताया कि प्रसव से पूर्व प्रसव के बाद 42 दिन के अंदर जिस महिला की मृत्यु हो जाती है उसे मातृ मृत्यु कहते है ये अप्रशिक्षित असुरक्षित गर्भपात एवं प्रसव में अधिक रक्त स्राव के कारण महिला की मृत्यु हो जाती है उन्होंने कहा कि भ्रूण लिंग जांच एवं कन्या भ्रूण हत्या न केवल कानूनन अपराध हैं, बल्कि समाज और मानवता के लिए भी गंभीर खतरा हैं। उन्होंने प्रशासन से जनपद में संचालित अल्ट्रासाउंड सेंटरों, नर्सिंग होमों एवं अन्य चिकित्सा संस्थानों की नियमित जांच कर दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग की। डॉ विजय जौहरी ने बताया कि चिकित्सा की डिग्री मानव सेवा हेतु प्रदान की जाती है लेकिन कुछ बाहरी चिकित्सा द्वारा अपनी डिग्री एवं पंजीकरण को कथित रूप से एवं अप्रशिक्षित लोगों के हाथों सौंप कर अवैध गर्भपात और कन्या भ्रूण हत्या जैसे अमानवीय कार्यों को बढ़ावा दिया जा रहा है जो मानवता एवं कानून दोनों के विरोधी है जिसके विरोध में इंडियन रेड क्रॉस सोसाइटी जागरूकता अभियान चलाएगी। अभियान के माध्यम से लोगों को भ्रूण लिंग जांच की कानूनी निषेधता तथा असुरक्षित गर्भपात से होने वाले स्वास्थ्य जोखिमों के प्रति जागरूक किया जाएगा। सोसाइटी ने समाज से "बेटी बचाओ दृ मातृ जीवन बचाओ" अभियान को जन आंदोलन बनाने का आह्वान करते हुए कन्या भ्रूण हत्या जैसी कुप्रथा के उन्मूलन में सक्रिय सहयोग की अपील की। कार्यक्रम में उपस्थित सभी महिलाओं को ओढ़ने के वस्त्र भेंट किए गए। इस बैठक में मीनू मिश्रा , नीलम सक्सेना , नन्हीं देवी , बेलावती मनीषा , मुन्नी देवी , रामश्री , सुधा , सरिता , रामकली जनपद के सभी विकास खंडो के ग्रामीण क्षेत्र की महिलाएं उपस्थित रही।

चरित्र में नशामुक्ति का समावेश ही सच्ची जागरूकता– न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह

प्रयागराज, (संवाददाता)। विश्व तम्बाकू रहित दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय मद्यनिषेध एवं समाजोत्थान अधिकारी कार्यालय, प्रयागराज क्षेत्र, प्रयागराज द्वारा सिविल डिफेन्स एवं लायन्स क्लब के संयुक्त तत्वाधान में राजकीय उद्यान शहीद चन्द्रशेखर आजाद पार्क, प्रयागराज में एक भव्य जनजागरूकता रैली का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य जनसामान्य को तम्बाकू एवं अन्य नशीले पदार्थों के सेवन से होने वाले दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करना तथा नशामुक्त समाज के निर्माण हेतु प्रेरित करना था। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह, न्यायाधीश, इलाहाबाद उच्च न्यायालय रहे। उनके साथ विशिष्ट अतिथि के रूप में नीरज मिश्रा, उपनियंत्रक सिविल डिफेन्स, प्रयागराज,

राजीव तिवारी, सहायक उपनियंत्रक सिविल डिफेन्स, प्रयागराज तथा लायन्स क्लब के लायन अर्पणधर दुबे, मंडलाध्यक्ष , लायन उदय चंदानी, उप मंडलाध्यक्ष प्रथम लायन उमेश चंद्र कक्कड़, उप मंडलाध्यक्ष द्वितीय लायन शीतला प्रसाद श्रीवास्तव, प्रोटोकॉल अधिकारी, सदस्य नशा मुक्त भारत अभियान, पवन पाण्डेय यातायात निरीक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन सुश्री चारूल मिश्रा, क्षेत्रीय मद्यनिषेध एवं समाजोत्थान अधिकारी, प्रयागराज क्षेत्र द्वारा किया गया। न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह द्वारा हरी झण्डी दिखाकर जनजागरूकता रैली को रवाना किया गया। इस अवसर पर न्यायमूर्ति सत्यवीर सिंह ने अपने संबोधन में कहा कि तम्बाकू एवं अन्य मादक पदार्थों का सेवन व्यक्ति, परिवार और समाज के लिए अत्यंत हानिकारक है।

बीएड और सहायक आचार्य की परीक्षा में विज्ञान–हिंदी ने बढ़ाई मुश्किलें

वाराणसी, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश बीएड प्रवेश परीक्षा–2026 और सहायक आचार्य भर्ती परीक्षा रविवार को शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न हुई। बीएड परीक्षा में दोनों पालियों को मिलाकर 10,979 अभ्यर्थी अनुपस्थित रहे, जबकि सहायक आचार्य परीक्षा में 6,787 अभ्यर्थियों ने परीक्षा छोड़ दी। परीक्षा देकर निकले अभ्यर्थियों ने बताया कि बीएड में रीजनिंग और सामान्य ज्ञान के प्रश्न अपेक्षाकृत कठिन रहे, वहीं सहायक आचार्य परीक्षा में विज्ञान और हिंदी विषय के सवालों ने उन्हें सबसे अधिक उलझाया। उत्तर प्रदेश बीएड प्रवेश परीक्षा–2026 दो पालियों में 106 केंद्रों पर आयोजित की गई।

विकास कार्यों की प्रगति का जायजा लेने विकास खंड मसौधा पहुंचे डीएम शशांक त्रिपाठी

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या। जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी ने विकास खंड मसौधा का निरीक्षण कर विभिन्न विकासात्मक एवं जनकल्याणकारी योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा की। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यालय व्यवस्था, अभिलेखों के रख–रखाव तथा संचालित योजनाओं की प्रगति का अवलोकन करते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश दिए।जिलाधिकारी ने कहा कि शासन की प्राथमिकता वाली योजनाओं का लाभ पात्र लाभार्थियों तक समयबद्ध एवं पारदर्शी तरीके से पहुंचना सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि विकास कार्यों में गुणवत्ता बनाए रखते हुए निर्धारित समयसीमा के भीतर कार्य पूर्ण कराए जाएं तथा जनता की समस्याओं का त्वरित निस्तारण सुनिश्चित किया जाए।निरीक्षण के दौरान विभिन्न विभागों द्वारा संचालित योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए जिलाधिकारी ने अधिकारियों को नियमित मॉनिटरिंग करने तथा क्षेत्र में भ्रमण कर योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन की व्यवस्था सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।उन्होंने विकास खंड परिसर की साफ–सफाई, अभिलेखों के सुव्यवस्थित रख–रखाव, प्रेरणा कैंटीन एवं कार्यालयीय कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने पर भी बल दिया।इस अवसर पर मुख्य विकास अधिकारी कृष्ण कुमार सिंह, ज्वाइंट मजिस्ट्रेट आदित्य विक्रम अग्रवाल सहित कई विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

मूलभूत समस्याएं बनी राम नगरी की प्रमुख पहचान

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। पेयजल,पार्किंग,जाम,सीवर लाइन के नाम पर सड़कों पर खुदे गड्ढे,गंदगी सहित कई समस्याएं रामनगरी की प्रमुख पहचान बन चुकी हैं। जिसके चलते यहां के स्थानीय लोगों के अलावा दूसरे प्रदेशों तथा देश–विदेश से राम मंदिर सहित अन्य प्रमुख मंदिरों पर दर्शन पूजन करने आने वाले श्रद्धालुओं को काफी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। देखा जाए तो इस समय राम मंदिर निर्माण की वेस्ट श्रद्धालुओं की काफी भीड़ रामनगरी आ रही है जिसके चलते चार पहिया के वाहनों में बढ़ोतरी तो संभव ही है। वाहनों को खड़ा करने के लिए चाहे ट्रैफिक विभाग हो या फिर नगर निगम पर्याप्त संख्या में पार्किंग का भाव है जिसका पूरा–पूरा लाभ अवैध रूप से अयोध्या धाम में कुछ लोग उठा रहे हैं यह सभी बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के वाहनों को खड़े करने के नाम पर मुंह मांगा पैसे भी वसूल रहे हैं। इसके अलावा बीच–बीच में यातायात पुलिस अन्य संबंधित विभागों के साथ लोगो को जाम से राहत देने के लिए बैठक तो कल ली जाती है लेकिन वह बैठक इस कमरे तक ही सीमित रहती है और परिणाम आज भी यही है कि शहर के सभी मार्गो चौराहा पर जाम ही जाम दिखाई देता है। इस समय सबसे बड़ी समस्या शहर के अधिकतर मार्गो मोहल्ले व कॉलोनियों की गलियों मैं सिविल लाइन बिछाने के लिए गड्ढे तो खुद दिए जाते हैं लेकिन उसे वैसा ही छोड़ दिया जाता है और आने वाले दिनों में खासकर बारिश के दौरान यहां पर रह रहे स्थानीय लोगों के अलावा इधर से गुजरने वाले लोगों को भी काफी मुसीबत का सामना करना पड़ेगा।इसी तरह कई समस्याएं रामनगरी में है परंतु इन गंभीर समस्याओं पर संबंधित विभाग चुप्पी साधे है जिसके चलते स्थानीय लोगों में उनके अधिकारियों कर्मचारियों के प्रति आक्रोश प्राप्त है।

मानक पर खड़े नहीं उतर रहे शहर में खुले सैकड़ो पेइंग गेस्ट हाउस

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। शहर में खुले सैकड़ो पेइंग गेस्ट हाउस मानक पर खड़े नहीं उतर रहे हैं। यहां पर रहने वाले आगंतुकों के पतो का सत्यापन करना भी संबंधित गेस्ट हाउस के संचालक मुनासिब नहीं समझते हैं।वही कई गेस्ट हाउस ऐसे जगहो पर जहाँ पर रास्ता सकरा व गलियों के चलते चार पहिया छोटे वाहन भी अंदर नहीं जा सकते हैं।जिसके चलते अयोध्या विकास प्राधिकरण, नगर निगम, पुलिस विभाग के साथ साथ फायर विभाग के कार्य शैली पर भी प्रश्न चिन्ह लग रहा है।लेकिन सत्तादलों व तीन विभागों के अधिकारियों के मिलीभगत से लोगों को नियम कानून को ताख पर रखकर बिना भौतिक सत्यापन के रेवड़ी की तरह होम स्टे और गेस्ट हाउस का लाइसेंस रेवड़ी की तरह बांटा जा रहा है। विकास प्राधिकरण कार्यालय के मुताबिक वर्तमान समय मे शहर के कई मोहल्लों, कॉलोनियों,स्थानों में करीब 1300 से अधिक पेइंग गेस्ट हाउस खुले हुए है। विकास प्राधिकरण की मानक के मुताबिक गेस्ट हाउस खोलने के लिए आने जाने के लिए रास्ते और आपातकाल में छोटी दमकल एम्बुलेंस आदि आने जाने के लिए रास्ते भी होने चाहिए।लेकिन शहर के कई ऐसे मोहल्लों,गलियों व कई सकरी गलियों में इस तरीके पेइंग गेस्ट हाउस खुले हुए देखे जा सकते हैं जो मानक पर खड़े नहीं उतर रहे।सवाल यह उठता है कि आखिर किस बात पर सहमत होकर अधिशयन विभाग ने इन गेस्ट हाउसों को खोलने के लिए एनओसी जारी कर दिया।जबकि यहां पर ना तो निकलने का रास्ता है और ना ही अन्य संसाधन।वहीं पुलिस विभाग भी इन गेस्ट हाउस को ना तो निरीक्षण करती है और ना ही इन गेस्ट हाउस में रुकने वाले लोगों का तथा उनके पतों का सत्यापन करती है। जब कभी शहर में कोई बड़ी घटना हो जाती है तब पुलिस दिखावे की नाम पर कुछ होटलों तथा गेस्ट हाउस में चेकिंग करने का ड्रामा जरूर करती है।वही गेस्ट हाउस के स्वामी भी इन जगहों पर रुकने वाले आगंतुकों के आधार कार्ड का सत्यापन भी नहीं करना चाहते और बिना सत्यापन कराए इन लोगों को कमरे में रुकने के लिए अनुमति प्रदान कर देते हैं।जबकि रामनगरी सुरक्षा के दृष्टि से अति संवेदनशील की श्रेणी में आती है।इसके बावजूद भी यहां पर सुरक्षा के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमापुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक

श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव

मो0 – 7007415808, 9415034002

Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार–पत्र से संबधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।